Rs. 5/-

શ્રી સ્વામિનારાયણ

August 2009





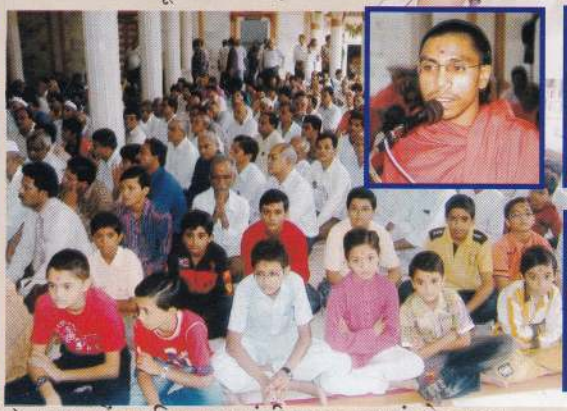




प.पू. लालजी महाराजश्री के १२ वें जन्मोत्सव के प्रसंग पर कक्षा १० एवं १२ के तेजस्वी विद्यार्थियों को पुरस्कार आरती उतारते हुये स्कीम कमेटी के सदस्य एवं कारभारीजी। से सन्मानित करते पू. लालजी महाराजश्री।

प्रागट्योत्सव प्रसंग
आशीर्वाद देते हुये प
लालजी महाराजश्री

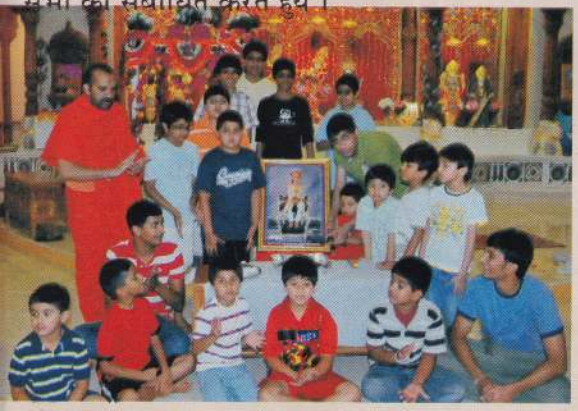








पार्षद निलेश भगत (गु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी) सभा में उपस्थित सत्संगी बालक एवं श्रेष्ठजन।
सभा को संबोधित करते हुये।



सीने मीन्सन मंदिर में शा. विश्वप्रकाशदास के मार्गदर्शन में सत्संग की भावि पीढी अपने प्राण प्यारे पू. लालजी महाराजश्री के प्रागट्योत्सव को मना रहा है।

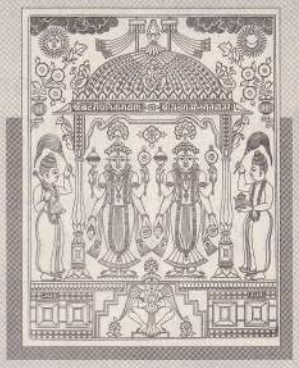


प.पू. बड़े महाराजश्री को कोठंबा के हरिभक्त प्रसादी अलौकिक वस्तु भेंट कर रहे हैं।





वडनगर मंदिर में
श्री घनश्याम महाराज के
पाटोत्सव की आरती उतार
हुये प.पू. महाराजश्री तथा
वडनगर मंदिर की सभा में
आशीर्वाद देते हुये प.पू.
महाराजश्री तथा सभा में
अहमदाबाद मंदिर के महंत
स्वामी एवं शा



संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४१९५९७ - ९८२५३०९५९७
फोक्स : २७४१९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)
पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देश में ५०१-००
विदेश १०,०००-००
प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - 3 अंक : 28 अगस्त-2009

अनुक्रमणिका

१.	अरमदीयम	२
२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी कुमकुम रुपरेखा	३
३.	अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव की छत्र छाया में सभी के प्यारे भ गवि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री का १२ वाँ प्रागट्योत्सव धूमधाम से मनाया गया	४
४.	गुरु पूर्णिमा के प्रसंग पर आशीर्वचन	६
७.	श्रावण मास मे.....	८
८.	प.पू. लालजी महाराजश्री के १२ वें प्रागट्योत्सव प्रसंग पर आशीर्वचन	९
९.	सत्संग बालवाटिका	१०
१०.	भक्ति सुधा	१२
११.	प्रश्न पेटी	१६
१२.	सत्संग समाचार	१७
१३.	विदेश सत्संग समाचार	२२

: संपादक , मुद्रक एवं प्रकाशक :
महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा
श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए
श्री स्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१
से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित

संपादक , मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिएश्री स्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर,

अस्मदीयम

विशेषनियमो धार्यश्चातुर्मास्येऽखिलैरपि ।
एकस्मिन् श्रावणे मासि स त्वशक्तैस्तु मानवैः ॥
(शि.पत्री ७६)

प्रभुने आज्ञा किया है कि हमारे आश्रित भक्त चातुर्मास में कोई एक विशेष नियम लें यदि अशक्त हों तो श्रावण मास में एक नियम अवश्य लें ।

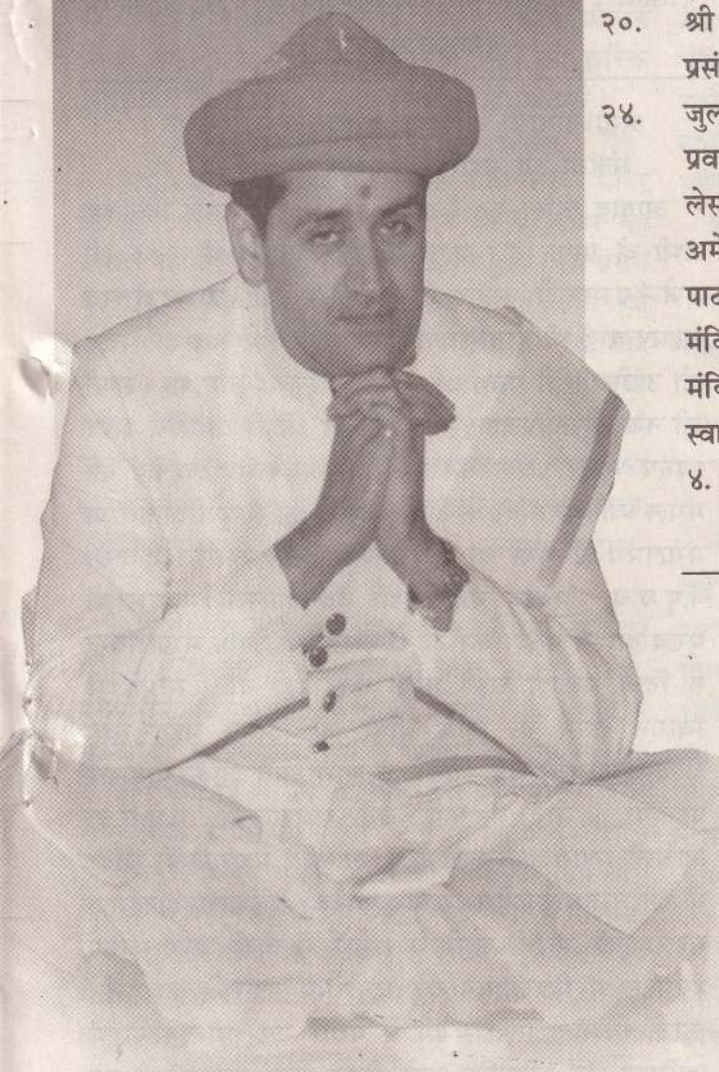
चातुर्मास अर्थात् सर्वावतारी श्रीहरि की आज्ञा के अनुसार विशेष नियम लेकर प्रभु को प्रसन्न करने का नियम, उसमें भी श्रावण मास तो भक्ति, ज्ञान, तप तथा वैराग्य का सुवर्णकाल । जैसे किसान मौसम (सीजन) के अनुसार खेती करके अनाज उगाता है और अपने भंडार को भर लेता है, जिससे भविष्य में सूखा या दाहा पड़ जाय तो कोई चिंता नहीं । जिस तरह प्राणी अपने शरीर में आवश्यकतानुसार चरबी का संग्रह कर लेता है, जिससे संकट के समय वहीं जीवन के के लिये उपयोगी हो शके । इसी तरह यह चातुर्मास तथा उस से भी विशेष श्रावण मास जो भक्ति का पाथेप एकत्रित करने का मास है । श्रावण मास में विशेष भक्ति करके जीवन के श्रेय मार्ग में राहखर्च अर्थात् भजन भक्ति आत्मनिष्ठा पूर्वक की जाय तो इस मास की सार्थकता है । इसके साथ यह भी जानने लायक है कि श्रावण मास में ही भक्ति करनी चाहिए बाकी के महीनों में संसार के सुख को भोंगे यह इसका मतलब नहीं है । यह मास विशेष भक्ति का मास है । अन्य मास तो प्रभु की भजन-भक्ति तो करना ही है । लेकिन चातुर्मास में विशेष भजन भक्ति करके प्रभु के पास अपना विशेष लेखाजोखा हो इसलिये सतत प्रयत्न शील होकर विशेष कोई एक नियम ले ही लेना चाहिये । यद्यपि हम सभी प्रयत्न तो करते ही रहते है, आगे इसी तरह करते रहने में प्रभु की प्रसन्नता है, वही सुख है । इसी में श्रीहरि की प्रसन्नता संभव है ।

आप सभी हरिभक्तों को कथा का सुख देने के लिये यहाँ से संत मंडल देश पर्यटन करने निकला है । इसलिये आप सभी उन सभी की उत्तम व्यवस्था से सेवा कीजिये । इसके साथ उनके साथ सत्संग करके प्रभु की यथार्थता को समझकर उपासना, धर्म इत्यादि के समझने में कही कमी हो तो उसे निकालने का प्रयाश अवश्य करियेगा ऐसी आप सभी से चाहना है ।

आप सभी की भक्ति तथा श्री नरनारायणदेव के चरणों में दृढ निष्ठा उत्तरोत्तर बढती रहे एसी शुभ कामना के साथ जयश्री स्वामिनारायण ।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा (जुलाई-२००९)



५. श्री स्वामिनारायण मंदिर, जीवराजपार्क सत्संग सभा में पदार्पण ।

७. गुरु पूर्णिमा प्रसंग पर संत-हरिभक्तों द्वारा गुरुपूजन ।

१७. प.पू. लालजी महाराजश्री का १२ वाँ प्रागट्योत्सव अपनी उपस्थिति में धूमधाम के साथ मनाये ।

१८. श्री स्वामिनारायण मंदिर हर्षद कोलोनी बापूनगर - महापूजा प्रसंग पर पदार्पण, वहाँ से घोड़ासर हरिभक्तों के यहाँ पदार्पण ।

२०. श्री कमलेशभाई धरमशीभाई पटेल के यहाँ महापूजा प्रसंग पर पदार्पण मेमनगर ।

२४. जुलाई से ३. सितम्बर तक युरोप - अमेरिका धर्म प्रवास ।

लेस्टर (यु.के.) श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव, अमेरिका में शिकागो श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव, पारायण, डिट्रोईट - श्री स्वामिनारायण मंदिर ५ वाँ पाटोत्सव, केनेडा टोरन्टो श्री स्वामिनारायण मंदिर में प्रथम पाटोत्सव तथा गेटवीक (यु.के.) श्री स्वामिनारायण मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण । ४. सितम्बर को स्वदेश अहमदाबाद आगमन ।

धार्मिक परीक्षा के विषय

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री नरनारायणदेव धार्मिक परिक्षा आगामी ता. २०-१२-०९ रविवार को सभी केन्द्रो पर लीजायेगी । केन्द्र संचालक अपने बाल केन्द्रों से नामावली ता. ३०-१०-०९ तक भेंज दे ।

बाल केन्द्र प्रारम्भ करने वाले को धार्मिक परीक्षा का एक सेट भेंट में दिया जायेगा ।

- संचालकश्री



अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव की छत्र छाया में सभी के प्यारे भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री का १२ वाँ प्रागट्योत्सव धूमधाम से मनाया गया

- लेखक : शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी (श्री सहजानंद गुरुकुळ वडनगर)

अयोध्यावासी आविया, हरिप्रसादनो परिवार ।
संबंधी श्री महाराज, सत्संग नो शणगार ॥

आषाढ कृष्ण-१० (ता. १७-७-०९) मंगल दिन हम सभी के प्राण प्यारे प.पू. लालजी महाराजश्री १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराज का १२ वाँ प्रागट्योत्सव अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव के प्रांगण में संत-हरिभक्तों की उपस्थिति में प्रातः ७-०० बजे मनाया गया था । सभी की नजर मुख्य प्रवेशद्वार परथी जब श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुप भीतर प्रवेश कर रहे थे । उस समय शहनाई की मंगल ध्वनि से मंदिर के अगल-बगल का सम्पूर्ण वातावरण मंगलमय हो गया था । जब प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री एवं लालजी महाराजश्री मुख्य द्वार से प्रवेश कर रहे थे उस समय उनके मुखारविन्द से दिव्य प्रकाश चारो तरफ फैल रहा था । सामने से स्वागत करने के लिये मंदिर के विद्वान महंत स्वा. हरिकृष्णदासजी बड़े आनंद के साथ आगे जाकर पुष्पहार पहनाया । बाद में प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री मंदिर में श्री नरनारायणदेव, राधाकृष्णदेव, धर्मभक्ति हरिकृष्ण महाराजकी आरती उतारे थे । बाद में तीनो अपर स्वरुप रंगमहल में विराजमान बड़े घनश्याम महाराज का दर्शन करके विशाल सभा मंडप में पधारे उस समय सभा में उपस्थित संत-हरिभक्ति खड़े होकर प.पू. महाराजश्री का

स्वागत करके अपने स्थान पर बैठ गये । इसके बाद सभा आरंभ हुई । सभा में सर्व प्रथम विद्वानो, पंडितो द्वारा स्वस्ति वाचन किया गया था । बाद में मंदिर महंत स्वामीने प.पू. लालजी महाराजश्री का प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का एवं प.पू. बड़े महाराजश्री का पुष्पहार से स्वागत किया था ।

इसके बाद प.पू. भावि आचार्य लालजी महाराजश्री के १२ वें प्रागट्योत्सव प्रसंग पर महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी, शा.स्वा. पूर्णप्रकाशदासजी, स.गु. महंत देवप्रकाशदासजी, महंत पी.पी. स्वामी छोटे (नारायणघाट), शा.स्वा. श्रीजीप्रकाशदासजी, महंत स्वा. नारायणप्रसाददासजी (मूली), शा.स्वा. कृष्णवल्लभदासजी (सुरेन्द्रनगर), शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी महंत स्वा. घनश्यामप्रकाशदासजी (माणसा), शा.स्वा. आनंदजीवनदासजी, शा.स्वा. निर्गुणदासजी, शा.स्वा. केशवप्रसाददासजी, ब्र. राजेश्वरानंदजी, को. दिगम्बर भगत, स्वा. धर्मजीवनदासजी, को. स्वा. जे.के., भक्तिकिशोरदासजी, स्वा. जगतप्रकाशदासजी, महंत स्वा. धर्मस्वरुपदासजी (नाथद्वारा), महंत नारायणप्रसाददासजी (महेसाणा), शा.स्वा. सत्संगभूषणदासजी तथा ईडर, हिंमतनगर, सापावाडा, टोरडा, प्रांतिज, पेथापुर, उनावा, सिद्धपुर, महंत स्वा. प्रेमस्वरुपदासजी, संत महंत, कमेटी के सदस्य श्री रतिभाई पटेल, श्री के.के. पटेल, श्री जी.के. पटेल, श्री रमणभाई पटेल, श्री दशरथभाई पटेल के सुपुत्र श्री अमीत पटेल, कारभारी मनीषभाई, श्री संदीपभाई तथा अग्रगण्य हरिभक्त पू. लालजी महाराजश्री का पूजन-अर्चन करके पुष्पहार से स्वागत करके आरती उतारकर शुभाशीर्वाद प्राप्त किये थे ।

इसके बाद मंडल के छोटे छोटे बालक पटेल कृणाल मोदी हर्षित, सोनी जय, सोनी प्रदीप, दर्शन, को. दर्शन इत्यादि सभी पू. लालजी महाराज का पूजन अर्चन-आरती का दिव्य लाभ प्राप्त किये थे । प.पू. लालजी महाराजश्री के १२ वें जन्मोत्सव के प्रसंग पर छोटे विद्यार्थी संत शा.अभयप्रकाशदास, शा. पुरुषोत्तमप्रकाशदास (वाली) पार्षद नीलेश भगत इत्यादि ने अपने प्रवचन से पू. लालजी महाराज को शुभेच्छा दिये थे । इसी तरह नियमित आनेवाले छोटे-छोटे बालकों में बोपल के हेपी, जीवराजपार्क के ठक्कर विशाल, ठक्कर ध्रुव इत्यादि ने अपनी भावात्मक वाणी द्वारा पू. लालजी महाराजश्री को शुभेच्छा दिये थे ।

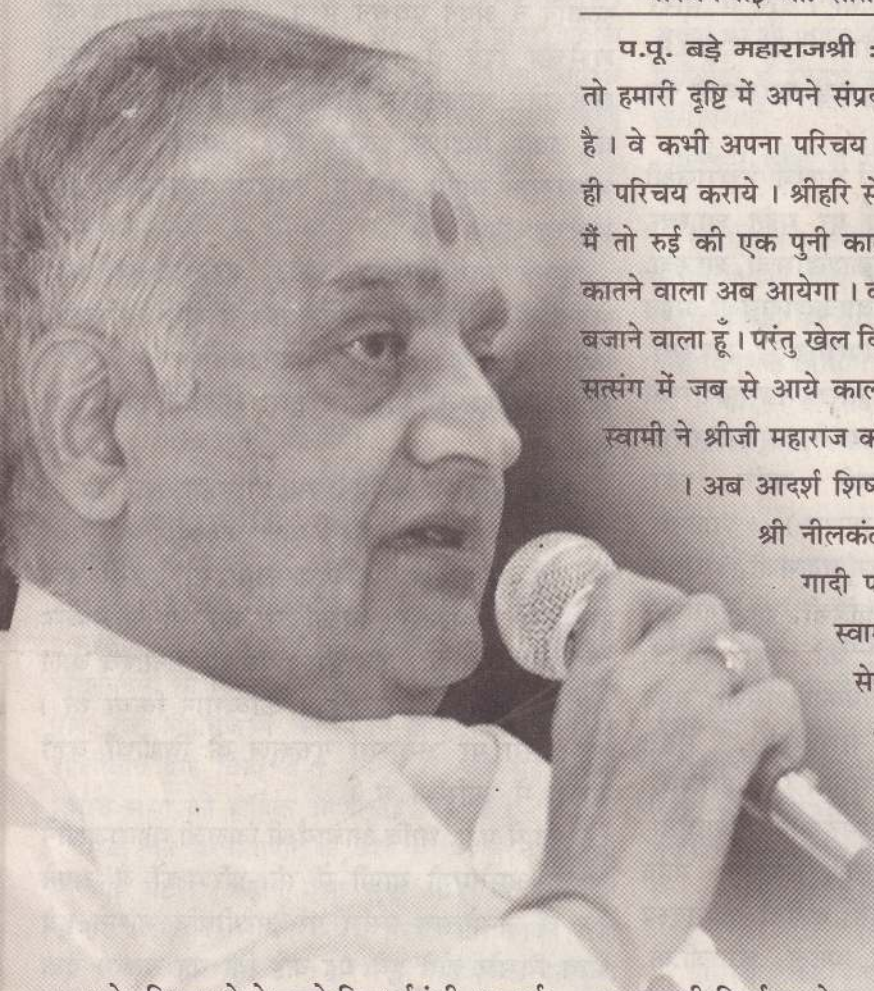
इसके बाद धर्मकुल वंदना महोत्सव में स्वयं सेवक के रुप में सेवा करने वाले समिति के सदस्यों को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराज द्वारा आशीर्वादपत्र दिया गया था ।

इसके बाद श्री स्वामिनारायण संस्कृत महाविद्यालय जेतलपुर में अभ्यास करने वाले तेजस्वी विद्यार्थियों को भी आशीर्वाद पत्र दिया गया था । इसी तरह हरिभक्तों के तेजस्वी विद्यार्थियों को भी आशीर्वाद पत्र दिया गया था । इस प्रसंग पर श्री न.ना.देव बाल सत्संग मंडल के बालकों ने काव्यगान किया था । इस प्रसंग पर असारवा गुरुकुल के विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे ।

अंत में प.पू. भावि आचार्यश्री लालजी महाराजश्रीने अपनी अमृतमयी वाणी में संत-हरिभक्तों से अपने १२ वें जन्मोत्सव प्रसंग पर आशीर्वाद मांगते हुये भाव विभोर होते हुये यह कहे कि यह सत्संग एक परिवार है । इसलिये सभी श्री नरनारायणदेव की छत्र छाया में रहें ऐसी अपेक्षा है । बाद में प.पू. बड़े महाराजश्री ने भी लालजी महाराज के विषय में निर्देश करते हुए कहा कि इस गादी पर आचार्यश्री का चयन स्वयं श्रीजी महाराज करते हैं, इसलिये लालजी महाराज का सभी को ध्यान रखना परं आवश्यक है । अंत में स्वामिनारायण महामंत्र की धून बुलाकर सभा के कार्यक्रम को पूर्ण किया गया । सभा का संचालन शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजीने किया ।

गुरु पूर्णिमा के प्रसंग पर आशीर्वचन

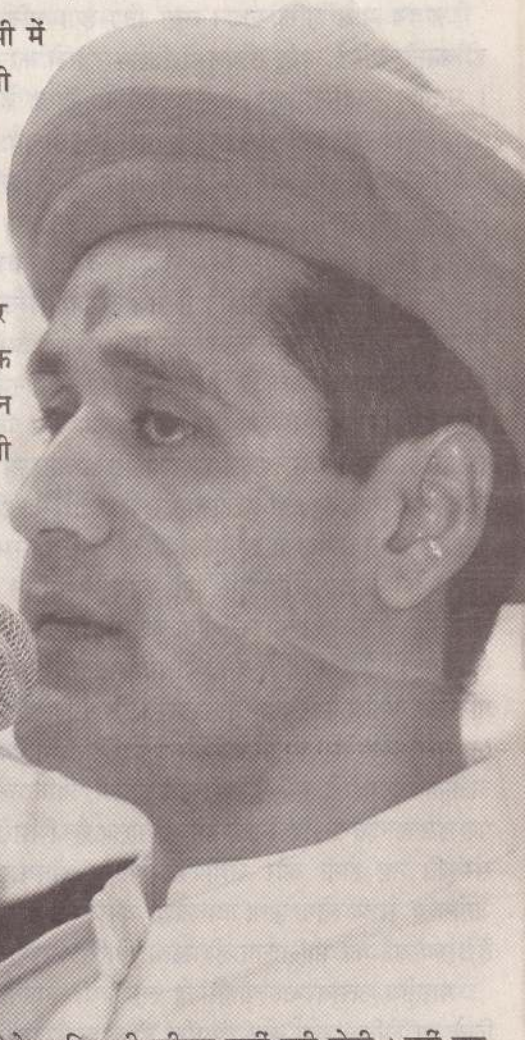
- गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)



प.पू. बड़े महाराजश्री : आदर्श गुरु का उदाहरण देना हो तो हमारी दृष्टि में अपने संप्रदाय में रामानंद स्वामी आदर्श गुरु है । वे कभी अपना परिचय नहीं कराये । वे सदा भगवान का ही परिचय कराये । श्रीहरि से भेट नहीं हुई थी तो भी वे कहते मैं तो रुई की एक पुनी कातने वाला हूँ । परंतु मन भर पुनी कातने वाला अब आयेगा । कई बार ऐसा कहते कि मैं डुगडुगी बजाने वाला हूँ । परंतु खेल दिखाने वाला अब आयेगा । महाराज सत्संग में जब से आये कालवाणी इत्यादि स्थलों पर रामानंद स्वामी ने श्रीजी महाराज की प्रधानता का ही प्रतिपादन किया । अब आदर्श शिष्य की बात करें तो हमारी दृष्टि में श्री नीलकंठ वर्णी श्रेष्ठ शिष्य है । जब तक गादी पर नहीं बैठे थे तब तक मुक्तानंद स्वामी के साथ रहकर शिष्य के रुप में सेवा भी किये और रामानंद स्वामीने आज्ञा की तो विना स्पृहा के गुरु का आज्ञापालन करने के लिये गादी पर बैठे थे ।

यह पद प्राप्त करना बड़ा कठिन है । एक नवीनभाई नाम के हरिभक्त थे वे कहते कि धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री शिर्षासन से मस्तक के नीचे सोपारी रखकर १०० वर्ष तक तप किये होंगे तब यह पद प्राप्त किये होंगे । इस पद पर नियुक्ति तो महाराज ही करते हैं । लेकिन इस पद को प्राप्त करने की अपेक्षा निभाना कठिन है । हमें ३५ वर्ष का अनुभव है । एक चिंतक ने लिखा है कि परोक्ष में त्यागी के धर्म की अपेक्षा स्वामिनारायण संप्रदाय के गृहस्थ आचार्यश्री का धर्म अधिक कठिन है । यह वाक्य एक सत्य भी है । हमें दोहरा उत्तरदायित्व सम्हालना पड़ता है । गृहस्थ जीवन में रहकर आचार्यश्री के धर्म को निभाना कठिन है । कोई वृद्ध संत, विद्वान या एकांतिक स्थितिको प्राप्त समाधि निष्ठ भक्त जब हमारा चरण स्पर्श करता है तो उस समय और गौरवपूर्ण स्थान की प्रतीति होती है, इसलिये हमे इस पद के अनुरुप आचरण करना पड़ता है । अपना संप्रदाय अन्योन्य खूब महिमा का संप्रदाय है । इस महिमा को समझकर ही आज इतनी संख्या के हमारे प्रति भावना व्यक्ति करने के लिये भक्त समुदाय उपस्थित है । आप सभी धन्यवाद में पात्र है । संप्रदाय में एकता,

शांति, समृद्धि तथा प्रेम, प्रगति सदा वृद्धि को प्राप्त हो ऐसी आज के दिन श्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना करके विराम लेता हूँ ।



प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री : वैसे तो प.पू. बड़े महाराजश्री में हमारा भी आशीर्वाद आजाता है, ये जो कहते हैं उसी में सभी मेरे भी भाव रहते हैं । फिरभी आप सभी के आग्रह पर हम कुछ कहते हैं । मैं कईबार कहता हूँ कि भगवान अपनी सम्पत्ति हैं । पैसा या पद अस्थायी होता है । ये सभी मायिक वस्तु भगवान की पहचान में बाधक है । जैसे कोई गाढे अन्धकार को तलवार या लकड़ी से मारकर दूर करना चाहे तो क्या वह दूर हो सकता है । उस अंधकार को दूर करना हो तो एक दीप जला दिया जाय, वह प्रकाश जहाँ तक रहेगा वहाँ तक अंधकार नहीं आयेगा । इसी तरह अपने हृदय में भगवान का वास है, यदि अपना संबध भगवान के साथ हो जाय तो अज्ञानरुपी अंधकार अपने आप दूर हो जायेगा । वचनामृत में महाराजने भगवान को प्रसन्न करने का बहुत सरल उपाय बताया है । भगवान का जो दृढ आश्रय करता है तो उसे कभी आपत्ति, दुःख नहीं आते । मनुष्य का मन बहुत चंचल होता है । हमें ऐसे भगवान का तथा ऐसे संत एवं ऐसे सत्संग का साहचर्य मिला है इसका ध्यान रखकर सदा प्रभु में दृढ भाव रखना चाहिये । मन स्थिर रहता नहीं है यहाँ आने पर मन में विचार आयेगा कि वहाँ अच्छा होगा, इसलिये वहाँ भी जाता है । यहीं-वहीं करने में कोई लाभ नहीं है । यहीं रहने में लाभ है । आनंद है । इससे अच्छा कहीं नही है । जगत में मनुष्य स्थल परिवर्तन करता रहता है । इसलिये ऐसे व्यक्ति की कीमत कहीं नही होती । नहीं वह इधर का रहता है नहीं वह उधर का रहता है । यथार्थ रुप में देखें तो यहाँ महाराज ने सब कुछ दिया है । वहाँ आप को मिनिस्टर का पद मिलेगा लेकिन यहाँ तो मिनिस्टर का मिनिस्टर बनने की बात है, मात्र मन में दृढता होनी चाहिये । क्योंकि हमें भगवान मिले हैं । फिर भटकने की क्या जरुरत ।

हमारी, संतो की तथा हरिभक्तों की फर्ज है कि श्री स्वामिनारायण भगवान, नरनराायणदेव प्रभु की पहचान करावें । कारण यह कि हम सभी एक परिवार के हैं । कुटुम्ब के प्रत्येक सदस्य की यह फर्ज होती है कि वे एक होकर प्रगति का मार्ग ढूँढे । आप सभी को महाराज बल दे, प्रत्येक को निश्चय एवं दृढता का भाव आवे ऐसी नरनारणदेव के चरणों में प्रार्थना ।

श्रावण मास मे.....

- शा.स्वा. अभयप्रकाशदास गु.स्वा. देवप्रकाशदासजी (नारायणघाट)

श्रावण मास भक्ति प्रधान कहा गया है । भक्ति तो सदा ही करनी चाहिये, परंतु श्रावण में विशेष रुप से करनी चाहिये । भगवान स्वामिनारायण ने शिक्षापत्री में लिखा है कि -

एकस्मित् श्रावणे मासि स त्वशक्तैस्तु मानवैः ।

भगवान ने सभी को एक विशेष आज्ञा की है कि चातुर्मास में कोई एक नियम अवश्य लेना चाहिये । इसलिये सभी को श्रावण महीने में विशेष रुप से भक्ति करने का विधान किया । बार-बार अर्थात् जिस महीने में रोज त्यौहार हो उसे श्रावण कहते हैं । मनुष्य अपनी भावना का मालिक है । उसकी जैसी श्रद्धा हो वैसा वह करता है । गोकुल अष्टमी के दिन कृष्णभक्त कृष्ण बन जाते हैं । जब कि कितने लोग उस दिन जूआ खेलते हैं । सांसारिक त्यौहार तो रजा-मजा-आलस्य के लिये आता है । जहाँ बहुत भीड़ हो वहाँ कोलाहल होता ही है क्हाँ धर्म का अभाव होता है । एकांत शांति वैचारिक सभानता का स्थान है । कितने लोग धर्म नहीं करते धर्म करने का ढोंग करते हैं । गोकुल अष्टमी को गीता का १२ वाँ अध्याय कितने लोग बांचते हैं । आज बांचने की परंपरा नष्ट हो गयी जिसका परिणाम मानसिक स्थिति अस्त व्यस्त हो गयी है । जीवन में आध्यात्मिकता का अभाव आता जा रहा है । भौतिकबाद का आक्रांत दिखाई दे रहा है, परिणाम स्वरुप व्यक्ति की परंपरा पर इसका इतना खतरनाक आने वाला है जिससे अपनी संस्कृति नष्ट होगी और सभी का जीवन अंधकारमय बन जायेगा । सभी लोग प्रायः अंधश्रद्धा की तरफ गति कर रहे हैं । त्यौहार का मौलिकता ही खत्म होती जा रही है ।

भारतीय उत्सव या त्यौहार तो लोगो में जागृति लाने के लिये था लेकिन यहाँ कुछ विपरीत ही होता है । मूल रहस्य अपनी जगह पर रह जाता है, नशा खोरी, नाचगान तथा अन्य भौतिक उपकरण वहाँ दिखाई देने लगते हैं । धर्म के हाथ होने पर आदमी का अपना स्वत्व खत्म हो जाता है, स्वत्व के नष्ट होते ही वह अपने को नष्ट कर देता है, अतः परंपरा का ख्याल रखकर ही जितने भी भारतीय त्यौहार आवें उन्हें मनाया जाय तो उसका आनंद कुछ और ही होगा । उसमें एक प्रकार की लय होगी, एक भावना होगी उसे आज सभी को समझने की जरुरत है ।

उसी परिप्रेक्ष्य में ध्यान देने लायक वात तो यह है कि श्रावणमास पूरा एक महीना व्यक्ति यदि धर्म को आत्मसात करले या जिस किसी विशेषनियम से प्रति बन्धित हो जाय तो उसे एक विशेष प्रकार की शांति मिलेगी । यह पवित्र मास वर्ष में एकबार आता है, पूरे महीने भर किसी शास्त्र का वाचन किया जाय या कोई जप अनुष्ठान किया जाय तो सद्यः फलकारक होगा और आत्मशांति भी मिलेगी । किसी सूफी संत ने कहा है कि -नूर उसका जहर उसका, फिर न देखे तो कसूर किसका ।

व्यक्ति को सदा उन्मुक्त रहने के लिये ही ये त्यौहार बनाये गये थे, न कि व्यसन करने के लिये । जब व्यक्ति संसार के प्रपञ्चोमें फंसा रहता है तब अशांति तथा उद्वेग मय जीवन रहता है, इन से बचने के लिये ये त्यौहार आते हैं जिससे वह मानसिक उद्विग्नता से दूर हो सके और आनंद की प्राप्ति कर सके । इन सभी में सर्वश्रेष्ठ यह श्रावण मास इसलिये है कि अन्य त्यौहार एक दिन के लिये आते हैं, जब कि श्रावण मास पूरे एक महीने रहता है, इसमें यदि हम, नियम, संयम, प्रत्याहार प्राणायाम, पुरस्सर कोई अनुष्ठान किया जाय तो आध्यात्मिकता के साथ भौतिक सुख-शांति मिलेगी ।

काका साहब कालेलकर ने जीवित त्यौहारों की बात की है, जीवित त्यौहार का मतलब अच्छी तरह उस त्यौहार को मनाया जाना । परम्परा का भान रहना ही जीवित त्यौहार मनाने का रहस्य है । जैसे श्रावण मास मनाने जा रहे हैं तो शिव से सम्बन्धित उसके क्या कर्तव्य होगे - प्रथम तो वह प्रतिदिन शिवालय में जाये और वहाँ भगवान भोलेनाथ को बिल्वपत्र दुग्ध, जल, फूल, फल, धूप, दीप इत्यादि अर्पण करके पूजा करें । ऐसा करना ही जीवित त्यौहार मनाया कहलायेगा । इतना ही नही मास पर्यन्त संयम रखे । इसी तरह अन्य त्यौहारों के रहस्य तथा परंपरा को समझकर मनाया जाय तो उसे अवश्य आत्मिक शांति मिलेगी । अपने संप्रदाय में भी उत्सवों को मनाने का भगवान स्वामिनारायणने विशेष आग्रह किया है । इसीलिये तो शिक्षापत्री में चार महीने का विशेष नियम उसमें भी श्रावण मास पर विशेष भार दिया था । अपने सत्संगी भी इस संसार की असारता को समझकर भगवतभक्ति परायण बने और उत्सवों के प्रति जागरुक रहे ऐसी प्रभु श्री नरनरायणदेव के चरणों में प्रार्थना ।

प.पू. लालजी महाराजश्री के १२ वें प्रागट्योत्सव प्रसंग पर आशीर्वचन

- गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)



अहमदाबाद मंदिर के महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी के सुदंर मार्गदर्शन से आषाढ कृष्ण-१० ता. १७-७-०९ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ सानिध्य में तथा संत हरिभक्तों की उपस्थिति में प्रतिवर्ष की तरह हर्षोल्लास के साथ प.पू. १०८ श्री लालजी महाराजश्री का १२ वाँ प्रागट्योत्सव मनाया गया ।

इस प्रसंग पर प.पू. लालजी महाराजश्रीने कक्षा १०-१२ की बोर्ड की परीक्षा में उत्तीर्ण तेजस्वी विद्यार्थियों का तथा श्री नरनारायणदेव धार्मिक शिक्षण विभाग के अलग अलग केन्द्रो के संचालक एवं धर्मकुल वंदना महोत्सव में सेवा करने वाले अलग-अगल विभाग के प्रतिनिधियों को आशीर्वाद रुप पत्र तथा श्री ब्रजेन्द्रप्रसादजी पुरस्कार योजनान्तर्गत नाना प्रकार के पुरस्कार देकर उत्साहित किये थे । नाना विद्यार्थी, संत-पार्षद तथा बालयुवक हरिभक्तों के प्रति भावना व्यक्त करने के बाद प.पू. लालजी महाराजश्रीने अपने आशीर्वाद में बताया कि, आज के दिन आप लोग मुझे कुछ देते हैं। उसी परिप्रेक्ष्य में हम आप सभी से आशीर्वाद मांगते हैं । इसके बदले में हम आप सभी को कुछ देना चाहते हैं वह यह कि श्री नरनारायणदेव सभी को खूब सुखी करें ।

प.पू. बड़े महाराजश्रीने आशीर्वचन में बताया कि हमे ऐसा था कि आज के दिन माइक सभी युवक संत-हरिभक्तों के हाथ में रहेगी लेकिन मेरे हाथ में भी आगयी । इसलिये लगता है कि आज भी हम युवान है । श्री नरनारायणदेव की गादी पर जो भी आचार्य होते हैं उन सभी का सिलेक्शन स्वयं श्रीजी महाराज करते हैं । इस गादी पर जिस समय जैसे आचार्य की जरुरत होती है उस समय वैसे आचार्य को रखे हैं । हम सभी को इसका अनुभव भी है । हमारे इस सत्संग का भावी खूब उज्जवल है ।

धर्मकुल जब अपना वतन छपैया छोड़कर गुजरात में आया उस समय गुजरात के लोगों की बोली, रहनी-करनी, रीति रिवाज सभी अलग था जिससे उनलोगों को परेशानी होती थी । मुकुंद ब्रह्मचारी महाराज की खूब सेवा करते, परंतु धर्मकुल जब से आया तब से धर्मकुल की सेवा में अधिक समय देने लगे । इससे महाराज की सेवा कम होगयी । उसी समय कोई महाराज के पास आकर शिकायत किया कि महाराज ! ये मुकुंद ब्रह्मचारी पहले आप की खूब सेवा करते थे परंतु जब से धर्मकुल आया उस समय से आपकी सेवा गौण तथा धर्मकुल की सेवा मुख्य कर दिये हैं । हमे ऐसा लगता है कि यह योग्य नहीं है । महाराजने कहा ऐसा ? बुलाओ ब्रह्मचारी को । उसे ऐसा लगा कि महाराज ब्रह्मचारी को अभी टांटेगे । परंतु हुआ कि मुकुन्द ब्रह्मचारी आये और महाराज प्रसन्न होकर उन्हें गले लगाकर उनके छाती में चरणारविंद दिये । उनसे कहने लगे कि हमारी सेवा के लिये सम्पूर्ण सत्संग समाज है, परंतु धर्मकुल की सेवा कौन करेगा ? वह सेवा आप कर रहे हैं, इसलिये हम आपके ऊपर प्रसन्न हैं । महाराज धर्मकुल को भोला कहे है, वह सार्थक भी है । इसीलिये तो संत-हरिभक्तों को कहे कि धर्मकुल का ध्यान रखना ।

आप सभी प्रत्येक कार्यक्रम में आचार्यश्री के पास कन्धे से कन्धा मिलाकर रहे हैं, इसका हमें खूब गौरव है । मुली में गुलाब गौर रहते है, वे प्रतिष्ठा में एक वाक्य हरदम बोलते है कि महाराज ! हम आपका ध्यान रखेंगे । आप मेरा ध्यान रखियेगा । यह वाक्य हमें बहुत अच्छा लगता है । यही वाक्य हम आप से कहते हैं कि आप सभी हमारा ध्यान रखोंगे तो हम आपका ध्यान रखेंगे । यह परिपाटी हंमेशा चलती रहे ऐसी श्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना करके विराम लेता हूँ ।

वडनगर के शा.स्वामी नारायणवल्लभदासजीने सभा का सुंदर संचालन करके सुशोभित किया था ।

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

प्रभु के पास दंभ नहीं चलता

- शा. हरिप्रियदासजी (गांधीनगर)-

जनमंगल स्तोत्र में भगवान स्वामिनारायण का एक नाम निर्दंभाय नमः है । दंभ भगवान को अच्छा नहीं लगता । यह वात प्रभु के चरित्र से समझा जा सकता है ।

भुज में जब महाराज पधारते तब प्रतिदिन सुंदरजीभाई के विशाल चौगान में सभा होती । भुज के कितने पंडित, विद्वान, मुमुक्षु भक्त सभा में आते ।

एक दिन सभा में कुछ गड़बड़ हो गयी । खचोखच सभा भरी थी । मुक्तानंद स्वामी तथा ब्रह्मानंद स्वामी साथ मिलकर कीर्तन गाने लगे । कीर्तन पूरा हुआ । श्रीजी महाराज ज्यों कुछ कहना चाहे कि उसी समय दो व्यक्ति आ गये । वे कोई परमहंस या महात्मा नहीं थे । लेकिन वेश वैसा ही बनाये थे । स्वामिनारायण भगवान उनका सत्कार किये । आइये, वैठिये । उनके साथ उनका कोई अनुयायी भी बैठा ।

श्रीजी महाराजने पूछा, कहाँ से आ रहे हैं ? किस संप्रदाय के हैं ? यह आप सभी की दीक्षा कौन सी है ? उत्तर दिये बिना वे सभी बोलने लगे कि हम सुने हैं कि आप समाधि कराते हैं । लेकिन यह आप को पता नहीं कि हम समाधिनिष्ठ हैं । थोड़े समय में ही हमें समाधि हो जाती है । ऐसा कहकर आँख बंद किये । उनका शिष्य कहने लगा कि हमारे गुरु सच्चे समाधिनिष्ठ है, यहाँ से अभी नहीं उठेंगे । परंतत्व में लीन हो गये हैं । श्रीजी महाराज तुरंत एक भक्त को कहे कि आप सभी में से कोई एक समाधि करो । महाराज । आपकी कृपादृष्टि जिस पर होगी, उसे तुरंत समाधि लग जायेगी । लाधीबाई बहनों की सभा मैं बैठी थी, उन्हें समाधि हो गयी । श्रीजी महाराजने कहा लाधी बाई को समाधि हो गयी है । देखो भाई ! आप के गुरु को समाधि हो गयी । आप के गुरु को समाधि लगी है या उस बहन को समाधि हुई है ? श्रीजी महाराज हीरजीभाई को कहते हैं कि घर में कहीं जलता कोयला हैं ? ले आइये, समाधि में बैठे हुये परमहंस के हाथ पर दो जलता कोयलां रखते हैं तथा दो कोयला लाधीबाई के हाथ पर रखते हैं ? दोनों की परीक्षा होजायेगी ।

ज्यों जलते हुये कोयले की बात परमहंस ने सुनी कि अपनी आँख खोल दी और कहने लगे दूर रखो, हमारे पास नहीं लाना । क्यों ? समाधिवाले को क्या होता है ? शरीर के साथ उसका कोई संबन्ध ही नहीं रहता । शरीर को कोई जलावे या चुटकी भरे । इसी को समाधि कहते हैं । देखो यह हमारी लाधीबा । एक हरिभक्त को कहे कि लाधीबा के हाथपर जलते कोयले को रखो, ऐसा ही किया, शरीर जलने लगी, लेकिन उन्हें कुछ नहीं हुआ । महाराजने कहा कि देखो परमहंस ? इसे समाधि कहते हैं । आपकी समाधि तो कोयले का नाम सुनते ही उड़ गयी । अब श्रीजी महाराजने कहा हे परमहंस ? हमें किसी के साथ द्वेष नहीं, ईर्ष्या नहीं है । हम तो धर्म का प्रचार करते हैं । धर्म सहित भक्ति का प्रचार करते हैं । इससे संसार के सभी मुमुक्षु सुखी होंगे । सुख में रहकर प्रभु की भजन करें यही हमारा ध्येय हैं । इसलिये हे परमहंस आप समधिनिष्ठ बने हमें खूब आनंद होगा, लेकिन ऐसा दंभ क्यों करते हैं ? दंभ के साथ की गई भक्ति को प्रभु कभी स्वीकार नहीं करते । दंभ के साथ किया गया व्रत, तप, जप निष्फल होजाता है । दंभ सत्य नहीं होता । दंभ टिकता भी नहीं ।

प्रातः वृक्षों पर ओस दिखाई देती है, वह कुछ ही समय में सूर्य के उदय होने पर नष्ट हो जाती है । लेकिन जब वरसात होता है तो सूर्य को ढक देता है और सारे

जगत को आप्लावित कर देता है । जो सत्य है वह सत्य ही रहेगा और दंभ है वह दुर्गुण ही कहा जायेगा । परमहंस का वेश आप धारण किये हैं तो आप सच्चे परमहंस या कपटी परमहंस ? आप का वेश भी दंभ से युक्त है । आप जैसे लोग ही भोले-भाले मनुष्यों को छल देते हैं । श्रीजी महाराजने कहा कि यह दंभ की प्रक्रिया अनादि काल से चली आ रही है । रामायण काल में रावण साधु के वेश में सीताजी को चुरा ले गया था । सीताजी उस गेरुआ वस्त्र का मान रखीं लेकिन दंभी को पहचान नहीं शकीं । इसलिये दंभ को पहचानने की जरुरत हैं । सभी पीला सोना नहीं होता । श्रीजी महाराज परमहंस से कहते हैं कि दंभ का परित्याग करो तथा शक्ति के अनुसार भजन करो । उसके मन में स्वामिनारायण भगवान की वात सत्य लगी । वह विचार करने लगा कि हम तो परीक्षा करने आये थे लेकिन खुद की परीक्षा हो गयी । यह महाराज से क्षमा मांगा और चलता बना ।

मित्रों ! दंभ से संसार के लोगों को ठगा जा सकता है लेकिन प्रभु को दंभ से नहीं ठगा जा सकता । इसलिये सदा दंभ एवं दंभी से दूर रहना चाहिये । यह वात सदैव याद रखनी चाहिये कि भगवान को दंभ अच्छा नहीं लगता । इसलिये शतानंद स्वामीने भगवान को निर्दंभाय नमः कह कर वंदन किया है ।

•

स्वमेहनत में शांति है

- साधु श्रीरंगदास (गांधीनगर)

एक गाँव में कुछ धनिक व्यापारी तथा कुछ गरीब किसान रहते थे । गरीब किसानो का जीवन भगवान के भरोसे ही था । क्योंकि वरसात होती वर्ष अच्छा होता अन्यथा सूखा पड़जाता । बरसात अच्छी होने पर फसल अच्छी होती है । ऐसे जीवन में ईश्वर ही न्याय कर सकता है । लेकिन इतना अवश्य है कि भगवान विश्वंभर हैं । जगत के सभी जीवों की चिंता भगवान को होती है । उसमें भी जो भगवान का आश्रित होता है उस पर भगवान इस तरह अनुकूल होजाते हैं कि सर्वसुख प्राप्त होजाता है किसी को पता भी नहीं चलता है । भगवान के भक्त को कोई भले छले लेकिन भगवान तो उसकी रक्षा अवश्य करते हैं ।

एक किसान भक्त था । वह बहुत भोला था । वह किसानी भी करता और भगवान की भजन भी करता । बीज वपन के समय पृथ्वी में जो बीज डालता यानो अग्नि में आहुति डाल रहा हो । उस भक्त के पास धन संपत्ति बहुत नहीं थी । थोड़ी जमीन थी ।

एक दिन खेत में जाते समय एक वृद्धा स्त्री को बेहोश हालत में देखा । यह सभी जानते हैं कि गरीब आदमी दूसरे के दुःख को जानता है । पैसेदार पैसे के मद में दूसरे के दुःख को नहीं समझ पाता है । बल्कि गरीब को दबा कर उसका लाभ लेना चाहता है । वह भक्त उस वृद्धा को वृक्ष की छाया में ले गया और अपने कूयें में से पानी लाकर पिलाया और हवा किया । इतने में वृद्धा मां को होश आ गया । भगत देखी, उसके गले में तुलसी की माला, भाल में तिलक वह बहुत प्रसन्न हुई और बर मांगने को कहा । भगत ने कहा भगवान की दया से दोनो समय पर्याप्त भोजन मिल जाते है, खेती करते है, इसी से सभी गुजारा हो जाता है, इससे अधिक क्या चाहिये । उस समय वह वृद्धा भाता एक जादूकी अंगुठी निकालकर दी और कही कि भले तुम्हें कोई जरुरत नहीं है फिर भी अपने पास रखो कभी कोई जरुरत पड़े तो मांगना, आवश्यकता पूर्ण करेगी । इसके बाद वह भक्त घर वापस आ रहा था । रास्ते में उसका मित्र मिल गया । अपने मित्र को सम्पूर्ण वात बता दी और अंगुठी भी दिखाया । वह मित्र सोने की परख करता था । उसका मन बिगड़ गया और सोचने लगा कि वह शुद्ध सोने की अंगुठी तथा चंमत्कारी भी है । उसने कहा यह अंगुठी मैं अपने पत्नी

(अनुसंधान पान नं १५ पर)

भक्तिसुधा

महाराज की महिमा कम हो तो आप का यह धन कम होगा ?

- तरलाबहन अतुलभाई पोथीवाला (मेमनगर)

भुज में सूरजबाई नाम की एक ब्राह्मणी रहती थी । श्रीजी महाराज पर अपार श्रद्धा थी । रातदिन महाराज का ही भजन-स्मरण करती रहती थी । सूरजबाई प्रतिदिन कबूतरों को ज्वार डालती और मन ही मन प्रार्थना करतीं कि खूब आनंद से आप लोग खाना, आप सभी महाराज की कबूतर हैं । सूरजबाई एक बार महाराज का दर्शन करने के लिए गढ़डा गयी । महाराज का दर्शन करते ही आंखो में से अश्रुधारा बहने लगी । प्रतिदिन महाराज का महाप्रसाद तैयार करके स्वयं खिलाने जाती थी ।

एकबार उन्हें विचार आया कि मैं प्रतिदिन भुज में कबूतरों को ज्वार डालती थी वह यहाँ नहीं हो पा रहा है ऐसा मन में संकल्प हुआ लेकिन मन में तो महाराज वसे हुये थे । इस संकल्प को महाराज जान गये और स्वयं कबूतरों को दाना डालने लगे ।

सभी को आश्चर्य हुआ कि महाराज आज ऐसा क्यों कर रहे हैं ? लोगोंने महाराज से पूछा महाराज आप क्या कर रहे हैं ? महाराज ने कहा सूरजबाई से आप लोग पूछिये । सभी कहने लगे के सूरजबाई कितनी भाग्यशाली हैं । महाराज ने कहा यह तो हमारे साथ अक्षरधाम से आयी है । बहुत लोगों का इनके हाथ कल्याण होगा ।

सूरजबाई के हाथों कल्याण भी हुआ । उस में से थी, कच्छ के रामपुर गाँव की धनबाई । विवाह के बाद तुरंत ही धनबाई के पति का अवसान हो गया । धनबाई का मन वैराग्य पूर्ण हो गया इससे वे अपने मन को प्रभु के साथ जोड़ली । संयोग से सूरजबा का सत्संग हुआ और उनके मनकी दृढता बढ गयी । रोम-रोम में प्रभु का वास हो गया । सूरजबा की खूब इच्छा थी कि कच्छ में खूब बड़े-बड़े यज्ञ करना है, उत्सव करना, हरिभक्तों को भोजन कराना है । एकबार धनबाई से उन्होंने अपने मन की बात बतायी । धनबाई ने कहा इसके लिये बहुत खर्च होगा, इतना धन कहाँ से आयेगा । सूरजबा हंसते हुए कही, तुम्हारा नाम ही धनबाई है फिर धन की क्यों चिंता करती है । ऐसा कहकर सूरजबा को डेढ रुपया दी । और कही कि लेजा इससे तुम यज्ञ, उत्सव, भोज इत्यादि करना मंदिर बनाना, लेकिन महाराज के नाम की महिमा रख कर यह काम करेंगी तो धन कभी घटेगा नहीं ।

धनबाई वह डेढ रुपया लेकर घर गयीं और एक थैली में रखी । इसके बाद सूरजबा का देहांत हो गया ।

कुछ समय वीतने के बाद धनबाई ने महाराज को आगे रखकर श्रीनरनारायणदेव गादी की प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी की आज्ञा लेकर सेवा यज्ञ-चालू कर दिया । एक के बाद एक उनके कार्य होने लगे । भागवत का पारायण, सत्संगीभूषण, हरिवाक्य सुधासिन्धु, भक्त चिंतामणी, शिक्षापत्री, सत्संगिजीवन इत्यादि का पारायण क्रमशः प्रारंभ होगया ।

पारायण में उत्सव में, यज्ञ में, मंदिर में तथा चरणारविंदो के पदार्पण में एवं सर्वजीवहितावह कार्य में पैसों की धारा बहादीं । इतना धन धनबाई के पास आया कहां से ? तो सूरजबाई ने जो जेढ रुपया आशीर्वाद के साथ दिया था उसी का यह प्रतिफल है । यह धन मात्र सत्संग के लिये था, स्वयं के लिये तो परिश्रम की रोटी थी । वे प्रतिदिन एकवार भोजन करती, जिसमें बाजरी की रोटी सुखी होती । रातदिन श्रीहरि के स्मरण मेंअपना समय बिताती थी । इस तरह धनबाई का स्थान संप्रदाय में प्रथम क्रम में आता है । सूरजबा के बताये मार्ग पर चलते हुये समय वीतते स्वेच्छा से शरीर त्याग कर दिया । यह श्रीहरि की महिमा का फल है ।

•

मानव का महाशत्रु आलस

- सां.यो. मोधीबा (स्वा.मं. बहनो का धोली)

आलस का मतलब सुस्ती, दीर्धसूत्रता, प्रमाद, मोक्षमार्ग का बाधक, किसी भी कार्य में रुकावट करने वाला, अज्ञान ।

आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महानरिपुः

आलस्य मानव कामहान शत्रु बताया गया है । शत्रु किसे कहा जाय ? जो अपने कार्य में विध्न करे उसे शत्रु कहते हैं । इसी तरह विध्न करने वाला अपनी शरीर में भी हैं । अपना दिया हुआ खाता है और अपना ही बिगाड़ता है । जिसका नाम है आलस्य-प्रमाद, दोनो सगे भाई है । कितने लोग इनदोंनो को एक मानते हैं । लेकिन दोनो में भेद हैं ।

प्रमाद किसे कहते हैं ? जो मनुष्य रात दिन प्रवृत्ति में रहकर खेती का काम करें, व्यापार - धंधा करे, नौकरी करे तथा अन्य कोई भी परिश्रम का काम करके थकता नहीं है जब मंदिर जाना होता है तो कहता है थक गया हूँ, कल जाऊँगा । इस तरह जो सांसारिक कार्य में २४ घंटे थकता नहीं है और मोक्ष कार्य में बेदरकारी बतावे उसे कहते हैं प्रमाद ।

जबकि आलसी मनुष्य तो इस लोक तथा परलोक दोनो में ध्यान नहीं देता । धंधा में ध्यान न दे, भोजन बनाने में वेमन से बनावे तो कच्ची पक्की, भोज़न बनने पर भी समय से न खाये, स्त्रियां रविवार को भोजन न बनाना हो, इसलिये बाजार में जाकर खाती है । ये सभी आलस्य के लक्षण हैं । आलस्य हमें धर्मभ्रष्ट कर देता है ।

जैसे जैसे अन्दर उतरते जायेंगे वैसे-वैसे आलस्य अनेक रुप में दिखाई देगा । धर्म शिथिलता आलस्य के कारण आती है । यहलोक-परलोक विगाड़ने वाला आलस्य होता है । श्रीजी महाराज वचनामृत में कहे हैं कि जो आलस्य एवं प्रमाद का त्याग किया है वही इस जगत की माया से पार हुआ है । जो भगवान का शरण लिया वह इन दोनो शत्रुओं को जीत लिया । भगवान से विमुख लोग इन दोनो शत्रुओं से दूर नहीं सकते । इस तरह महाराजने दोनो को शत्रु बनाया है । भागवत में इन दोनो को चोर कहा गया है । प्रमाद करेगा तो दुष्ट इन्द्रिय रुपी घोड़े तथा बुद्धि रुपी सारथी के साथ रथी (जीव) को गलत मार्ग से लेजाकर अंधकार से व्याप्त जहाँ मृत्यु का भय है ऐसे संसार रुपी कूये में फेंक देगा ।

बाइबल में लिखा है कि हे आलसी तूं चींटी के पास जाकर उसके मार्ग को देख, वह सतत उद्यम करती रहती है । आलस्य जीवित मनुष्य की कबर है । कारण यह कि वह जीवित होते हुये भी मुर्दा (लाश) की तरह निष्क्रिय है । सनतसुजातजी ने कहा है कि प्रमाद वै मृत्युरहं ब्रवीमि, सदाप्रभादमृतत्वं ब्रवीभि अर्थात् मैं तो कहता हूँ कि प्रमाद ही मृत्यु है तथा अप्रमाद ही अमृत है ।

श्रीजी महाराज जब रात्रि में सोजाते तब संत-भक्त जब तक उनका मुख खुला रहता तब तक दर्शन करते रहते । जब करवट बदलते तो उस तरह मुख का दर्शन करते रहते । जब मुख ढंकलेते तभी लोग वहाँ से हटते थे। जो आलस्य के कारण यह लाभ न लेपाते थे उन्हे बाद में पश्चाताप होता था ।

विशिष्ट ऋषि यज्ञ के लिये लकड़ी स्वयं कुल्हाड़ी से फाड़ते । यह देखकर शिष्य लोग कहते गुरुजी यह कार्य हमें करने दीजिये । फिर भी वे स्वयं अपने कार्य करते रहते । शिष्यों ने पूछा कि गुरुजी आपके पास हजारों शिष्य है तो आप क्यों ऐसा करते हैं ? तब वशिष्ट मुनि ने कहा शिष्यों ? आप लोग यह सब कर सकते हो लेकिन मैं इसलिये हूँ कि यज्ञ के लिये लकड़ी फाड़ कर अपनी आलस्य दूर कर सकू । अपने बगीचे को खोदकर प्रसन्नता का अनुभव करेंगे । यदि आप के बाग न हो तो किसी अन्य के बाग में कुदार लेकर दो घंटे प्रतिदिन खोदकर देखियेगा ? बाद में उस बगीचे को देखकर आपको कितना आनदं होता है ।

एक शेठ का पुत्र बड़ा आलसी था । पिताजी बारंबार उसे कहते बेटा पहले उठाकरो, काम करो, सोये मत रहो । इसी तरह अनेको बार बताये लेकिन वह सुधरा नहीं । एकदिन अपने सगे सम्बन्धियो को घर बुलाया कि मेरे बेटे की स्मशान यात्रा निकालनी है । आप सभी जल्दी आजायें । सम्बन्धियों ने आकर देखा तो सो रहा था । सभी लोग कहने लगे कि हमें क्यों, बुलाये ? शेठ सम्बन्धियों को ऐसा सुनाया जो आप सभी सुनकर दंग रह जाओगे । उसने कहा कि आलस में सोने वाले इन्सान तथा मरे हुये शब में हम कोई अतंर ही नहीं मानते । पिता का यह शब्द सुनकर पुत्र खड़ा होगया और उसी दिन से अपने कार्य में लग गया

आलस्य का त्याग जबतक नहीं करेंगे । तब तक सफलता कभी नहीं मिलेगी । शक्ति होते हुये अशक्त मनुष्य की तरह जीवन व्यर्थ हो जायेगा ।

एक आदमी बदरीवृक्ष के नीचे सो रहा था, उसी समय उसके ऊपर पकी बैर गिरि, उसे खाने की इच्छा हुई लेकिन स्वयं लेने का प्रयास नहीं किया बल्कि किसी के आने की प्रतिक्षा करने लगा । इतने में वहाँ से एक ऊँट सवार निकला सूता हुआ आदमी जोर से चिल्लाया अरे भाई ऊँटवाले ? उसने कहा क्या है ? यहाँ आइये । क्यां है ? आप मेरे छाती पर एक पकी बैर गिरी है उसे मेरे मुख में डाल दीजिये न ? ऊँटवाले ने कहा क्या तुम्हारा हाथ टूट गया है । उसने कहा ऐसा नहीं, तो ठीक है हाथ ठीक है तो स्वयं क्यों नहीं खालेता । उसने कहा कि आप ही मेरे मुख में डाल देते तो अच्छा होता । ऊंटवाले ने कहा कितनी आश्चर्य की बात है मैं ऊँट को झुकाऊ, फिर नीचे उतरुँ, खिलाऊँ, ऊपर चढ़ू, कितना मुश्किल का काम है और तूं सोया है केवल हाथ बढाकर खाना है तो भी खा नही रहा है ऐसा कहकर आगे बढ गया । मेरे मुख में केवल बोर डालना था तो भी नहीं डाला । ऊँट वाला सुनकर कहा कि अरे तूं तो आलसियों का सरदार है ।

देखों भक्तों ! आलसी कितना दुःखी होता है । अपने ऊपर पड़ा हुआ बैर भी नहीं खा सकता है । इसलिये यह कहावत सत्य है कि जीता हुआ आलसी मनुष्य एक कबर के समान है ।

अंत में एक आनंद की बात कहती हूँ । एक शहर में आलसी लोगों की क्लब थी । उसमें वहीं सभ्य होता था जो आलसी होता । इस तरह उस क्लब में हजारो सभ्य थे । एक बार ऐसा हुआ कि उच्च अधिकारी किसी आलसी को बुलाकर फटकारे और कहे कि कल से हमारे क्लब में मत आना । सामने वालेने कहा मेरी गल्ती क्या है ? जो आप मुझे नौकरी से निकाल रहे हैं । अधिकारीने कहा कि कल मैं आप को तेजगति से गाड़ी चलाते देखा हूँ, आप धीमे गतिवाले नियम का भंग किया है । आलसी ने कहा साहब कल की घटना ऐसी थी कि ब्रेक मारने की जगह मेरे पैर एक्सीलेटर पर था, इसलिये गाड़ी की स्पीड तेज हो गयी । उसी समय आप देखे होंगे । यह सुनकर उसका स्तिफा वापस ले लिया और उच्च पद पर नियुक्त कर दिया ।

देखों भक्तों ! गाड़ी के टकराने की चिंता छोड़कर एक्सीलेटर से पैर ही नहीं उठाया । यह आलस्य की परमसीमा है । कहीं हम भी ऐसे आलसी तो नहीं है । आलस्य के कारण प्रभु की भजन भी नहीं करते । सम्पूर्ण दिन व्यापार-धंधा, नौकरी, खेती करके जब मंदिर जाना चाहिये तब कुछ न कुछ बहाना आजाता है । आज थक गया हूँ । कल जाऊगा । इस तरह करने से हमारी भी गिन्ती आलसी में ही होगी ।

●

गादीवालाजी के आशीर्वचन में से आज्ञापालन ही श्रेष्ठ उपाय

- कोटक वर्षा नटवरलाल (घोडासर)

इस संसार में मनुष्य के सुख दुःख का कारण प्रारब्ध है । प्रारब्ध कर्म अर्थात् संचित कर्म, जो कर्म का परिपाक फल रुप में प्राप्त होता है । कर्म प्रारब्ध के रुप में मनुष्य जन्म मिला है । ऐसे प्रारब्ध कर्म को भी चार प्रकार से कहा गया है । तीव्र प्रारब्ध कर्म, मंद प्रारब्ध कर्म, अति मंद प्रारब्ध कर्म । मंद प्रारब्ध कर्म तथा अति मंद प्रारब्ध कर्म, ऐसा है कि जो कर्मफल के परिणाम के अनुसार सुख-दुःख आता है और सरलता से भोगाजाता है । परंतु जो तीव्रप्रारब्ध कर्म तथा अति तीव्र प्रारब्ध कर्म को निकाचित कर्मी कहा जाता है । जिसे भोगना ही पड़ता है । जैसे कोई बालक हो उसे उसके माता पिता समझाते हैं कि कूदना ठीक नहीं है, इससे चोट लगने की डर है । फिर भी वह नही मानता है और कूदता है परिणाम स्वरुप उसका हाथ-पैर टूट जाता है । उसके बाद वह बालक रोते हुये कहता है कि पीड़ा सहन नहीं हो रही है । आप मेरी पीड़ा ले लीजिये, लेकिन यह संभव नही है । परंतु माता पिता दवा करते हैं तथा उसे समझाते हैं तो दुःख में थोड़ी राहत हो जाती है । परंतु दुःख तो स्वयं भोगना ही पड़ता है । इसी तरह मनुष्य जन्म मिलने के बाद सभी ज्ञान होते हुये भी खराब काम करते रहते हैं । श्रीजी महाराज की आज्ञा का उल्लंधन करते रहते हैं । बाद में जब आज्ञा का उल्लंधन करते है तो भगवान से प्रार्थना करते हैं कि प्रभु

दुःख जल्दी दूर कर दीजिये । जो संभव नहीं है । परंतु भक्ति करने से दुःख हल्का हो जाता है । भक्ति में इतनी शक्ति है कि दुःख को नियन्त्रित कर सकती है । परंतु सभी लोग ऐसी शिकायत करते हैं कि भक्ति करने का समय ही नहीं मिलता । प.पू. गादीवालाजी इस विषय में एक दृष्टांत देती है कि नारदजी को ऐसा अभिमान था कि मेरे जैसा भगवान का कोई भक्त नहीं है । तो भगवान नारदजी को कहते हैं कि, एक जगह पर मेरा एक भक्त रहता है । नारदजी उस स्थान पर जाते हैं और पता लगाकर आते हैं कि वह आपका भक्त सुबह-सायं इस तरह दो बार ही आप का नाम लेता है । बाद में दिन भर तो खेती का काम करता रहता है । उसमें कोई धार्मिक लक्षण नहीं दिखाई देता । आप उसे श्रेष्ठ भक्त कैसे कहते हैं । यह सुनकर भगवान ने नारदजी को एक तेल से भरी कटोरी देते हैं और कहते हैं कि आप पूरी पृथ्वी की प्रदक्षिणा करके आइये, लेकिन एक बूंद तेल गिरना नहीं चाहिये । नारदजी कटोरी का तेल लेकर पूरी पृथ्वी की प्रदक्षिणा तो कर आये आप प्रदक्षिणा कर रहे थे उस समय कितनी बार आप मेरा नाम लिये थे । तब नारदजीने कहा कि आपने तो कहा था कि एक बूंद तेल गिरना नहीं चाहिये, इसलिये मेरा ध्यान तेल न गिरने पर था । आपका ध्यान उस समय आपकी याद नहीं किया । अब आप बताइये कि आप को मात्र तेल पर ही ध्यान रखना था तो भी मेरी याद नहीं कर सके, लेकिन वह भक्त नाना विध जंजाल में फसा होने पर भी प्रतिदिन दो बार मेरी याद तो करता ही है । इसलिये वह भक्त श्रेष्ठ है । आप भक्ति करे इसका मतलब यह नहीं कि संसार के व्यवहारिक सभी कार्य छोड़कर भजन करने बैठ जाईये । जितना संभव हो उतनी भक्ति करनी चाहिये । इसलिये कि जो प्रारब्ध कर्म है वे सभी धीरे-धीरे नष्ट हो जाय.

उपरोक्त आशीर्वचन में प.पू. गादीवालजीने यह समझाया है कि यदि किसी को अपने जीवन में दुःख नहीं आने देना है तो शिक्षापत्री के नियम को दृढता से पालन करे । कर्म के मुख्य तीन प्रकार हैं । प्रारब्ध, क्रियमाण, संचित कर्म । प्रारब्ध कर्म अर्थात् कर्म फल सन्मुख हो वही प्रारब्ध कर्म । क्रियमाणकर्म अर्थात् प्रातः जागकर रात्रितक जो कर्म करे उसे क्रियमाण कर्म कहते हैं । संचिक कर्म - अर्थात् जिस कर्मफल को देने के लिये सन्मुख हो उसे संचित कर्म कहते हैं । इसलिये शिक्षापत्री की आज्ञा का पालन करना श्रेष्ठ कर्म है । इसीसे सभीप्रकार के दुःख कहते हैं । भक्ति करने से भी शक्ति मिलती है । इस तरह प.पू. गादीवालाजी ने आज्ञापालन पर भार देकर संसार में रहकर भी भक्ति की जा सकती है जिससे कर्म बंदन से मुक्ति सरलता से मिले । यही अक्षरधाम पहुंचने का सरल उपाय है ।

(सत्संग बाल वाटिका पान नं ११ से आगे)

को बताकर तुम्हे दे दूँ तो कैसा रहेगा । वह विचारा भोला भाला उसके मित्र के कपट की बात समझ में नही आयी । वह मित्र अंगुठी अपने घर ले गया । उस अंगुठी को रख लिया उसकी जगह दूसरी बनाकर ले आया और दे गया । वह कपटी मित्र उस अंगुठी से रात्रि के समय सुवर्ण बरसात करने को कहा, वह अंगुठी इतना सुवर्ण का वरसात की कि वह मित्र उसी के नीचे दबकर मर गया । यह समाचार सुनकर भक्त मित्र के घर गया और अंगुठी वापस ले आया, पत्नी से कहा कि मित्र के घर यह घटना हुई है, अब हम अधर्म से पैसा नहीं कमायेगे, पुरुषार्थ के पैसों से जीवन यावन करेंगे । जब वृद्धावस्था आयेगी तब इस अंगुठी का सहारा लेंगे । अपने पुरुषार्थ से वह पैसावाला हुआ ।

रावण की लंका सुवर्ण की थी फिर भी सुखी नहीं था । सोने की नगरी द्वारिका, जिसे भगवान कृष्णने समुद्र में डुबादी । यदि सोना ही सुखकारक होता तो भगवान सभी को सोना बांट देते । इसलिये मेहनत की कमाई से सुख सुलभ है वही सोना है । वही सुखी कर सकता है । इसलिये भगवान स्वामिनारायणने शिक्षापत्री में आज्ञा किया कि जो अपने अनुकूल उद्यम हो वही करना चाहिये ।

..... प्रश्नपेटी .....

साधु भक्तिनंदनदास गुरु शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (श्री स्वामिनारायण मंदिर, जेतलपुर

प्र. १. "गमे तेवो, धीरजवान होय अने स्वरुपवान स्त्री सभा में आवे त्यारे एनी वृत्ति एनी रुपमां तणाया विना रहे नही ।" यह किस वचनामृत में श्रीजी महाराज का शब्द है ।

प्र. २. दरवाजा खुलते ही बिल्ली के मुख में चूहे को पकड़कर लेजाते हुये देखकर अरे पापी इतना भयंकर पाप करते हो, चूहे को छोड़ दो, इतना सुनते ही बिल्लीने चूहे को छोड़ दिया । तंडफते हुये उस चूहे के ऊपर स्वामीने पानी का छीटा किया पाप जल गया । बाद में स्वामीने क्या कहा तथा वे स्वामी कौन थे ।

प्र. ३. सत्संग में अन्नवस्त्रादि यथायोग्य मिलता है फिर भी मानसिक शांति न रहे इसका कारण पंच विषय में आशक्ति है । वह विषय अनेक प्रकार का बताया गया है । इसलिये पंच विषय का त्याग करके ही संत होना चाहिये । लेकिन संत का लक्षण स.गु. मुक्तानंद स्वामीने किस पद में वर्णन किया है । तथा यह बात किसने कही है ।

प्र. ४. पंच पात्रों का नाम लिखिये ।

प्र. ५. भोजन के चार प्रकार हैं, लेकिन कौन-कौन ?

प्र. ६. "जे पुत्रने तात नहीं भणावे, बाल पणे लाड घणा लडावे" .... इस पंक्ति को पूर्ण करो ।

प्र. ७. "पावैगे दुःख पावैगे हरि भजन विना दुःख पावैगे, दुर्लभ देह भजन विन तजके, मार जमकी खावैंगे..... हरि भजन विना...." इस जीव को चेतावनी देने वाले इस पद के रचयिता कौन ?

मई २००९ महीने के प्रश्नपेटी के सच्चे उत्तर

(१) ग.प्र.प्र. ४० (२) जीव, ईश्वर तथा माया को जो अच्छी तरह जाने उसे ज्ञानी कहा जायेगा (शिक्षापत्री-१०४) (३) हूँ श्रीजी महाराजनुं चरण दाबुं । (४) असुर-दुष्कल । (५) १. स्वांग २. उषांग ३. सालील्प ४. सपार्षद (६) "हारे नही मेलु रे, मावा मारा नेणुंनी आगे थी नही मेलु रे, हरि नवजावुं रे, नव जावुं रे, मावा मारुं मंदिरयुं मेलीने नवजावुं रे ।" (७) स.गु. प्रेमानंद स्वामी ।

१. शारदाबहन कांतिभाई पटेल - नांदोल
२. कैलासबहन विष्णुभाई पटेल - नांदोल
३. शिल्पा मणीलाल पटेल - दहेगाम
४. माणेकबहन मणीलाल पटेल - दहेगाम
५. मेघाबहन कमलेशकुमार पटेल - कुहा
६. साकरबहन नटवरभाई पटेल - नांदोल
७. दक्षाबहन घनश्यामभाई सोनी - अमदाबाद
८. सां.यो. शिल्पाबा, शितलबा - स्वा.मं. सुरेन्द्रनगर
९. शारदाबहन मोहनलाल सोनी - नवा वाडज
१०. त्रिभोवनदास लक्ष्मणभाई पटेल - नवा वाडज
११. कंचनबहन बाबुभाई पटेल - रतनपर
१२. सां.यो. रंजनबा, रेखाबा - बालासिनोर
१३. पटेल कोकिलाबहन नटवरभाई - मेमनगर
१४. वर्षाबहन ए. सोनी - मेमनगर
१५. भावनाबहन कमलेशकुमार - खंधडीया
१६. ज्योति नलिनभाई आचार्य - मोरबी
१७. पटेल गोरधनभाई शंकरदास - सोजा
१८. चंद्रिकाबहन, ज्योत्सनाबहन - जीरागढ
१९. मनाणी पुष्पाबहन - जीरागढ
२०. काचा कोशीका - जीरागढ
२१. हितेशभाई भूडीया - केरा (लंडन)

नोट : जेतलपुरधाम में बिराजमान श्री रेवतीबलदेवजी हरिकृष्ण महाराज के दर्शन अब इन्टरनेट पर : "www.jetalpurdarshan.com"

सत्संग समाचार

अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में १२ घंटे की अखंड धुन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की शुभ आज्ञा से तथा पू. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी की प्रेरणा से प्रसादी की सभा मंडप में मेघराजा को प्रसन्न करने के लिये तथा देश में सर्वत्र शांति का वातावरण रहे इसकेलिये सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान की धुन की गयी थी । इस धुन में अहमदाबाद-खाखरिया के संत हरिभक्त जुड़े थे । धुन का प्रारंभ प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से हुआ था । रात्रि में ८-०० बजे पू. महंत स्वामी ने धुन की पूर्णाहुति की थी । धुन में बड़ी संख्या में संत-हरिभक्त भाग लिये थे । इस प्रसंग पर को. पार्षद दिगम्बर भगत तथा जे.के. स्वामीने चाय-पानी की सुंदर व्यवस्था की थी । *- भक्ति स्वामी*

अहमदाबाद मंदिर में हिंडोला दर्शन

संप्रदाय के परंपरानुसार आषाढ कृष्ण द्वितीया से अपने प्रत्येक मंदिरो में ठाकुरजी के नये-नये अलंकारो-उपकरणों से सजाकर झुलाया जाता है । सम्पूर्ण श्रावण मास नानाविध अलंकारो से सजे झूले प्रभु के दर्शन का लाभ मिलता है । इस वर्ष कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में पू.महंत स्वामी की प्रेरणा से को.पार्षद दिगम्बर भगत, को. जे.के. स्वामी, योगी स्वामी, निलेश भगत, भंडारी सूर्यप्रकाश स्वामी तथा कोठरा के सभी स्टाप वालों ने सुंदर ढंग से झूले को सजाने का कार्य किया । सेवा करने वाले हरिभक्तों की तरफ से नाना विध फूलों द्वारा प्रभु को अलंकृत किया गया था । श्री घनश्याम महाराज रंग महोल तथा अक्षरभुवन एवं हवेली में विविध प्रकार का झूला बनाया गया था । श्री नरनारायणदेव के पुजारी ब्र. राजेश्वरानंदजी तथा संत मंडल ठाकुरजी को झूले में बैठाकर भक्तों को दर्शन का लाभ दिये थे । *- योगी स्वामी*

श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर गत परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के नाम

कक्षा-१२ (उत्तर मध्यमा) (१) स्वा. गोपालचरणदास गुरु स्वामी प्रेमवतीनंदनदासजी ७६% (जूनागढ) (२) स्वामी हरिकृष्णदासजी गुरु स्वामी हरिकेशवदासजी ७५.५४% (धोलेरा) (३) स्वामी गोपालजीवनदासजी गुरु प्राणजीवनदासजी ७०.६२% (मूली)

कक्षा-१० प्रथमा-३) (१) त्रिवेदी सागर ७२.४३% (२) पार्षद निलेश भगत गुरु महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी ७१.५७% (अहमदाबाद) (३) स्वामी व्रजभूषणदास गुरु श्यामसुंदरदासजी ७१.४३% (हरिद्वार) - *संचालक शा.स्वा. हरिओंप्रकाशदासजी*

श्री व्रजेन्द्र पुरस्कार योजना में कक्षा-१० तथा १२ के प्रथम पाँच विद्यार्थियों की नामावली

कक्षा-१० (बालक) (१) पटेल दीप राजेन्द्रभाई ९४.७७% (कुबडथल) (२) शाह सौमिल अक्षयभाई ९३.६९% (अहमदाबाद) (३) पटेल धुमित रमेशभाई ९२.३१% (अहमदाबाद) (४) टांक जय पंकजभाई ९३.००% (अहमदाबाद) (५) पटेल दिव्यांग भरतभाई ९१.२३% (अहमदाबाद)

कक्षा-१० (बालिकायें) (१) मोदी राजश्री कौशिककुमार ९२.९२% (अहमदाबाद) (२) ठक्कर त्रिष्ना अशोकभाई ९१.०८% (अहमदाबाद) (३) पटेल वृन्दा राजेन्द्रकुमार ९०.९२% (अहमदाबाद) (४) जादव कृति राजेशभाई ८९.६९% (अहमदाबाद) (५) पटेल फोरम महेशभाई ८९.८% (अहमदाबाद)

कक्षा-१२ सायन्स (बालक) (१) देसाई संकेत धीरजभाई ९४.४०% (अहमदाबाद) (२) पटेल पार्थ मुकेशभाई ८९.६०% (३) महेता आकाश हसमुखराय ८७.२० (अहमदाबाद) (४) मामतोरा देवांग हरीशभाई ८४.९०% (अहमदाबाद) (५) भावसार घनश्याम रमेशभाई ८३.८०% (अहमदाबाद)

कक्षा-१२ सायन्स (बालिकायें) (१) विठ्ठलाणी वैभव नवनीतभाई ९४.२०% (अहमदाबाद) (२) पटेल निलय कीर्तिभाई ८८.१४% (अहमदाबाद) (३) सोनागरा नरेन्द्रकुमार नागजीभाई ८३.८६% (चराडवा) (४) खत्री हार्दिक राजेन्द्र ८३.७१% (वडोदरा) (५) सोनी स्नेहल भूपेन्द्रकुमार ८३.७१% (अहमदाबाद)

कक्षा-१२ सामान्य (बालिकाये) (१) पटेल

धर्मिष्ठाबहन भगवानदास ८७.७१ (खेखा) (२) भावसार हिमाद्री पंकजभाई ८५.८६% (अहमदाबाद) (३) चौकसी पूजा जगदीशभाई ८४.८०% (अहमदाबाद) (४) भावसार मैत्री प्रकाशकुमार ८४.२९(अहमदाबाद) (५) झिंझुवाडिया वैभवी दिनेशकुमार ८३.२९(अहमदाबाद)

उपरोक्त सभी विद्यार्थियों को प.पू. लालजी महाराजश्री के हाथों आशीर्वाद के साथ संमानित किया गया था । *-को. जे.के. स्वामी*

वडनगर मंदिर में पाटोत्सव

ऐतिहासिक तथा धार्मिक सुप्रसिद्ध शिखरी श्री स्वामिनारायण मंदिर वडनगर में विराजमान श्री घनश्याम महाराज का ४८ वाँ वार्षिक पाटोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत स्वा. हरिसेवादासजी की प्रेरणा से ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष-१२ ता. २०-६-०९ को श्री भावसार रजनीकांत गोरधनलाल की तरफ से प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ वरद् हाथों से ठाकुरजी का महाभिषेक श्रृंगार आरती अन्नकूट की आरती की गयी थी । महाभिषेक तथा अन्नकूट का आयोजन पूजारी स्वा. अभिषेकप्रसादजीने किया था । इसके बाद सभा का आयोजन किया गया था । सभा में यजमान श्री रजनीकांतभाई इत्यादि ने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पूजन-अर्चन करके आरती उतारी थी । इस प्रसंग पर वनडगर के अग्रीणी श्री सोमाभाई डी. मोदी का पू. महाराजश्री ने फूलहार से तथा साल ओढाकर संमान किये थे । सभा में मंदिर के ट्रस्टी श्रीहरिभाई मोदी, श्री भगाभाई चोकसी, नवीनभाई मोदी, श्री भालचंद्रभाई, श्री दिलीपभाई इत्यादिने पू. आचार्य महाराजश्री का पुष्पहार से स्वागत किया था । इसके बाद अहमदाबाद मंदिर के महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदास, शा.स्वा. पूर्णप्रकाशदासजी, शा.स्वा. आनंदजीवनदासजी तथा श्री नवीनभाई मोदी ने प्रेरक प्रवचन किया था । अंत में पू. आचार्य महाराजश्रीने वडनगर के हरिभक्तों के भावना की प्रशंसा किये थे । अंत में संत हरिभक्तों को भोजन कराकर प्रसंग की पूर्णाहुति की गयी थी । सभा का संचालन शा. नारायणवल्लभदासजीने किया था । इसके अलांवा भोजनालय की व्यवस्था स्वा. अभिषेकप्रसाददासने की थी । *- शा.नारायणवल्लभदासजी, नडनगर*

अयोध्या मंदिर में पाटोत्सव

उत्तर प्रदेश के अन्तर्गत मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री रामचंद्रजी की जन्म भूमि अयोध्या के रायगंज मुहल्ले में सुप्रसिद्ध शिखरी श्री स्वामिनारायण मंदिर में विराजमान श्री राधाकृष्णदेव श्री हरिकृष्ण महाराज का ८५ वाँ वार्षिक पाटोत्सव श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभाशीर्वाद से अयोध्या मंदिर के महंत स्वा. देवप्रकाशदासजी की प्रेरणा से आषाढ शुक्ल-४ ता. २६-६-०९ को अमदावाद नारायणपुरा के श्री वसंतीबहन बाबूभाई पटेल परिवार तथा श्रीमती कंचनबहन दशरथभाई पटेल परिवार की तरफ से धूमधाम के साथ संपन्न किया गया था । पाटोत्सव के निमित्त यजमान परिवार द्वारा ठाकुरजी का पूजन तथा ब्र. स्वा. वासुदेवानदंजी द्वारा ठाकुरजीका महाभिषेक किया गया था । इसकेबाद स्वा. माधवप्रियदासजीने सुंदर ठाकुरजी को सजाकर आरती उतारी थी । बाद में सभा का आयोजन किया गया था । सभा में छपैया मंदिर के महंत ब्र. वासुदेवानंदजी, स्वा. जगतप्रकाशदासजी, स्वा. नारायणवल्लभदासजी, स्वा. आनंदजीवनदासजी, छोटे पी.पी. स्वामी इत्यादि संत उपस्थित थे । घनश्याम महाराज की लीला भूमि छपैया में सेवा करने से कई गुना पुण्य मिलता है । अयोध्या मंदिर में नूतन धर्मशाला का कार्यारंभ होनेवाला है, उसमें सेवा करने के लिये संतो नें प्रेरणा दी थी । कार्यक्रम पूर्ण होने के बाद सभी भोजन का महाप्रसाद लेकर सभी विदा हुये थे । - *शा. नारायणवल्लभदासजी*

इडर मंदिर में १६३ वाँ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के हार्दिक आशीर्वाद से एवं इडर मंदिर के महंत स्वामी के मार्गदर्शन में श्री गोपीनाथजी हरिकृष्ण महाराज का १६३ वाँ पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया था ।

प.पू. महाराजश्री के वरद हाथों से प्रातः काल ६-३० बजे अभिषेक किया था । विशाल सभा में यजमान श्री भीखाभाई पटेल परिवारने पू. महाराजश्री का पूजन अर्चन करके आशीर्वाद प्राप्त किया था । इस प्रसंग पर अहमदाबाद, मूली, टोरडा, प्रांतीज, लालोडा, हिंमतनगर,

सोकली इत्यादि स्थानो से उपस्थित संत आशीर्वचन दिये थे । स्कीम कमेटी के सदस्य डॉ. के.के. पटेल तथा श्री जे.डी. पटेल ने सुंदर उद्‌बोधन किया था । प.पू. महाराजश्रीने हार्दिक आशीर्वाद दिया था । तथा महंत स्वामी की खूब प्रशंसा किये थे । सभा संचालन स्वा. हरिजीवनदासजीने किया था । सभी सत्संगी दर्शन का लाभलेकर धन्यता का अनुभव किये थे । - *को. सत्यसंकल्पदासजी*

प्रांतीज मंदिर में पाटोत्सव संपन्न

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में विराजमान श्री धर्मदेवभक्तिमाता श्री हरिकृष्ण महाराज आदि देवों का १२२ वाँ पाटोत्सव महाभिषेक प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के हाथों संपन्न हुआ महंत माधवप्रसाददासजी की प्रेरणा से श्री हसमुखलाल कचरालाल भावसार परिवार यजमान बनकर पूज्य महाराजश्री का पूजन-अर्चन-आरती का लाभ लेकर आशीर्वाद प्राप्त किया था । पू. महाराजश्री ठाकुरजीकी आरती उतारकर यजमान के घर आरती उतारी थी । इस प्रसंग पर संत धाम-धाम से पधारे थे । हजारो हरिभक्त दर्शन का लाभ लिये थे । - *हरिभाई मोदी*

मथुरा श्री स्वामिनारायण मंदिर में पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा यहाँ के महंत आनंदप्रसाददासजी तथा भानुप्रसाददासजी एवं महंत स्वा. गुरुप्रसाददासजी की प्रेरणा से श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज का २० वाँ पाटोत्सव वैशाख शुक्ल-१० ता. ४-५-०९ को धूमधाम से मनाया गया था । इस प्रसंग पर श्रीमद् भागवत पंचान्ह पारायण शा.स्वा. निर्गुणदासजी के वक्ता पद पर संपन्न हुआ था । ठाकुरजी का महाभिषेक प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों संपन्न हुआ था । इस प्रसंग के यजमान अ.नि. विमलाबहन रमणभाई पटेल के स्मरणार्थे श्री जितेन्द्रभाई रमणभाई पटेल थे । पाटोत्सव के यजमान श्री चंदूभाई ओधवजीभाई सोनी तथा रंजन बहन चंदूभाई सोनी (लंडन) परिवार थे । इस शुभ प्रसंग पर जेतलपुर से पू.पी.पी. स्वामी अग्रगण्य संत पधारे थे । अन्य संप्रदाय के संन्यासी भी उपस्थित थे । धार्मिक महानुभाव भी आये हुये थे । पू. हरिप्रसाददासजी, योगीचरणदास इत्यादि संत सेवा का कार्य किये थे । सभा संचालन यज्ञप्रकाशने किया था । *-व्रजेन्द्र नागर मथुरा*

कर्मशक्ति मंदिर दशाब्दी महोत्सव तथा बहनों के मंदिरमें मूर्ति प्रतिष्ठा

यहाँ के कर्मशक्ति विस्तार में बहनों के नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में ता. ७-५-०९ से ता. ११-५-०९ तक श्रीमद् सत्संगिजीवन पंचान्ह पारायण स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) के वक्तापद पर संपन्न हुआ । इसके अलांवा महाविष्णुयाग, महापूजा, शोभायात्रा, अन्नकूट, रक्तदान शिबिर इत्यादि का आयोजन किया गया था ।

प.पू. लालजी महाराजश्री की शोभायात्रा निकाली गयी थी । ता. ११-५-०९ की प्रातः में पूज्य महाराजश्री के वरद् हाथों से मूर्ति प्रतिष्ठा के बाद यज्ञपूर्णाहुति की गयी थी । अंत में संतो की प्रेरकवाणी तथा दातों का संमान किया गया था । इस प्रसंग पर पूज्य गादीवालाजी पधारी थी ।

इस प्रसंग पर श्री. अश्विनभाई दौंगा, श्री शैलेषभाई पटेल, श्री देवजीभाई दोंगा, श्री बलदेवभाई सुहागिया इत्यादि ने खूब सेवा की थी । नारायणघाट के पी.पी. स्वामी सभा संचालन किये थे ।- *गोरधनभाई सीतापरा*

नूतन निर्माणाधीन हर्षद कोलोनी बहनों के मंदिर में महापूजा

स.गु. महानुभावानंद स्वामी के शिष्य परंपरा में कालुपुर मंदिर के अ.नि. नारायणदासजी स्वामीने बापूनगर विस्तार में सत्संग का खूब पोषण किया था । प.पू. बड़े महाराजश्री के समय में उन्हीं के हाथों भाईयो तथा बहनों का अलग-अलग मंदिर बनाकर उसमें श्रीहरि की प्राण प्रतिष्ठा हुई थी । जिस में भाईयों के मंदिर में अ.नि. नारायणदासजी स्वामीने श्रीहरि की बहुत सारी प्रसादी की वस्तुयें दर्शनार्थ रखी है । प.पू. बड़ी गादीवालाजी तथा प.पू. लक्ष्मीस्वरुपागादीवालाजी के आशीर्वाद से यहाँ पर महिलावर्ग की संख्या बढने से मंदिर छोटा पड़ने लगा । इसलिये पूज्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा पू. शा.स्वा. निर्गुणदासजी एवं दासभाई की प्रेरणा से पुरुषों के मंदिर की जगह पसंद की गयी और प.पू. बड़े महाराजश्री के हाथों भूमि पूजन भी होगयी ।

परिणाम स्वरुप मित्रों के सहयोग से प्लान के अनुसार

मंदिर का ५०% कार्य पूर्ण होने जा रहा है । नूतन मंदिर के लाभार्थ पू. महाराजश्री की आज्ञा से तथा दासभाई की प्रेरणा से १९-७-०९ के दिन समूह महापूजा का आयोजन किया गया था । इस प्रसंग पर अहमदाबाद मंदिर, एर्पोच मंदिर, कर्मशक्ति मंदिर संत-पार्षद तथा हरिभक्त पधारे थे । अंत में सभी महाप्रसाद लेकर प्रसंग का स्मरण करते हुये स्वस्थान पधारे थे । महापूजा की पूर्णाहुति में प.पू. महाराजश्री पधारे थे । प्रासंगिक सभा में पू.शा. निर्गुणदासजी, पू.शा.स्वा. पी.पी. (छोटे) स्वा. आनंदजीवनदासजी, धारासभ्य श्री वल्लभभाई काकड़िया तथा डॉ. कनुभाई एस. प्रासंगिक उद्‌बोधन किये थे । प.पू. महाराजश्रीने महिलावर्ग में सुसुप्त शक्ति की प्रशंसा करते हुये शीघ्र मंदिर का निर्माण हो ऐसा आशीर्वाद दिये थे । - *गोरधनभाई सीतापरा*

बोपल श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से बोपल श्री स्वामिनारायण मंदिर का चौथा पाटोत्सव ता. १-५-०९ के दिन प.पू. बड़े महाराजश्री वरद् हाथों से सपन्न हुआ । महंत हरिवल्लभ स्वामी की प्रेरणा से श्री सेंधालाल करशनदास के सुपुत्र श्री नवीनभाई तथा अरविंदभाई ने प.पू. बड़े महाराजश्री का पूजन-अर्चन-आरती करके आशीर्वाद प्राप्त किये थे । अंत में पू. बड़े महाराजश्री समस्त सभा को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे ।

संतो की प्रेरकवाणी के बाद मंदिर के ट्रस्टी श्री रतिभाई पटेल जिन्होंने ऐसा सुंदर मंदिर बनाकर श्री नरनारायणदेव गादी को अर्पण किया था। उनकी सेवा की प्रशंसा की गयी थी । हरिभक्त महाभिषेक महापूजा तथा अन्नकूट दर्शन का लाभ लेकर भोजन करके विदा हुये थे । पूज्या गादीवालाजी यहाँ के बहनों पर खूब प्रसन्न है । प.पू. लालजी महाराजश्री भी यहाँ के बाल मंडल पर खूब स्नेह रखते हैं । को. अमृतभाई की सेवा सराहनीय है । - *प्रवीणभाई उपाध्याय*

कोठंबा

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. ७-५-०९ के दिन प.पू. बड़े महाराजश्री पधारकर ठाकुरजीकी आरती उतारे थे । बाद में सभा में बिराजमान हुये थे । संत-हरिभक्त पू. बड़े महाराजश्री की आरती उतारे थे । अ.नि. पू. करशनदासजी स्वामी के शिष्य स्वा. माधवप्रियदाजी ने अपने गुरु परंपरा में प्राप्त अलौकिक प्रसादी की वस्तुयें श्री स्वामिनारायण म्युझियम के लिये पू. महाराजश्री को अर्पण की थी । गाँव के हरिभक्तों ने भी श्री स्वामिनारायण म्युझियम में सेवार्थ अपने नाम लिखवाये ।- *का. अश्विनभाई*

ओगण गाँव में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे

विरमगाँव तहसील के ओगण गाँव में १४० वर्ष पुराना अपना मंदिर है । जो जीर्ण होने से जेतलपुर के पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से कोठारी भानुसिंहभाई जादव तथा विनुभाई मिस्त्रीने हरिभक्तों के साथ सहकार से मंदिर का जीर्णोद्धार करवाये । यदा-कदा पी.पी. स्वामी जेतलपुर से संतो के साथ पधारकर सर्वोपरिता का निश्चय करवाये ।

ता. १६-५-०९ के दिन हरिभक्तों के प्रेम में वशीभूत होकर पू. महाराजश्री संत मंडल के साथ पधारे थे। प्रासंगिक सभा में पू. पी.पी. स्वामी, व्रजवल्लभदास स्वामी, जे.के. स्वामी, रघुवीर स्वामी तथा सुखनंदन स्वामी अपनी वाणी का लाभ दिये थे । अंत में समस्त सभा को पू. महाराजश्री हार्दिक आशीर्वाद दिये थे । पू. महाराजश्री के चरण स्पर्श से सभी ने धन्यता का अनुभव किया था । भातवाले श्री चिमनभाई पटेल, खूब प्रेरणा रुप थे । समग्र आयोजन घनश्यामभाई जादव ने किया था । - *शा. व्रजवल्लभदास*

डांगरवा वांटो

डांगरवा (वांटो) गाँव में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा स्वा. वासुदेवचरणदासजी की प्रेरणा से महिलाओं के श्री स्वामिनारायण मंदिर का २३ वाँ पाटोत्सव पू. महाराजश्री के वरद् हाथों से ता. २४-४-०९ के दिन संपन्न किया गया था । प.पू. महाराजश्री ठाकुरजी की आरती उतारकर सभा में पधारे थे । सभा में संतो की प्रेरकवाणी के बाद पू. आचार्य महाराजश्री ने हार्दिक आशीर्वाद दिया था । - *एम बी. दरबार*

गवाडा श्री स्वामिनारायण मंदिर

यहाँ श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य

महाराजश्री की आज्ञा से पाटोत्सव के प्रसंग पर श्रीमद् शिक्षापत्री भाष्य त्रिदिनात्मक पारायण शा.स्वा. रामकृष्णदासजी के वक्तापद पर संपन्न हुआ था। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों ठाकुरजी की पाटोत्सव की आरती उतारी गयी थी । यजमान परिवार श्री वालजीभाई वालचंददास कोठारी, अमृतभाई, गोपालभाई, जयंतीभाई, रमेशभाई इत्यादिने पू. महाराजश्री का पूजन-अर्चन करके आरती उतारकर आशीर्वाद प्राप्त किया था । इस प्रसंग पर अहमदाबाद से महंत स्वामी, नारायणघाट के महंत स्वामी तथा छोटे पी.पी. स्वामी ने प्रेरक प्रवचन किया था । अंत में पू. महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । *- रमेशभाई कोठारी*

पुराने अरोडा मंदिर का पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से इटर मंदिर के महंत स्वामी की प्रेरणा से पुराने अरोडा मंदिर का तीसरा पाटोत्सव धूमधाम के साथ संपन्न हुआ । इस प्रसंग पर प.पू. आचार्य महाराजश्री का भव्य स्वागत किया गया था । महापूजा तथा अन्नकूट की आरती उतारने के बाद महाराजश्री सभा में पधारे थे । श्री महेन्द्रभाई के पिताजी पटेल परिवारने महाराजश्री का पूजन अर्चन करके आशीर्वाद प्राप्त किया था । धामोधाम से संत पधार कर प्रेरक वाणी का लाभ दिये थे । सभा संचालन शा.स्वा. हरिजीवनदासजी ने किया था ।- *को. सत्यसंकल्पदास*

ईश्वरपुरा (बदपुरा)

यहाँ श्री स्वामिनारायण मंदिर के १४ वें पाटोत्सव को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदास (छोटे पी.पी. स्वामी) की प्रेरणा से महंत स्वा. देवप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन में २०-५-०९ के दिन धूमधाम से मनाया गया । इस प्रसंग पर रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया था । श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की सेवा प्रेरणारुप थी । अन्य सेवा में एन.डी. चौधरी, नरनारायण ज्वेलर्स माणसा, श्री जसुभाई सोनी श्री मुकेशभाई इत्यादि हरिभक्तों की सेवा सराहनी थी । गाँव के हरिभक्त दर्शन का लाभ लेकर धन्य हो गये । *-चैतन्य स्वामी*

श्री स्वामिनारायण मंदिर नेसंगपुरा (खारवरिया)

इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान की पूर्ण कृपा से तथा पूज्य आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से खाखरिया जेसंगपुरा गाँव में श्री स्वामिनारायण मंदिर का जीर्णोद्धार होते ही नवनिर्मित मंदिर में २३-५-०९ के दिन प.पू. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से मूर्ति प्रतिष्ठा धूमधाम के साथ संपन्न हुई थी । इस प्रसंग पर शा.स्वा. रामकृष्णदासजीने कथा का सुंदर लाभ दिया था । यज्ञ तथा अन्नकूट की आरती प.पू. आचार्य महाराजश्रीने उतारी थी । इस प्रसंग पर अहमदाबाद मंदिर के महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी अ.नि. श्री हरिदासजी स्वामी का मंडल, नारायणपुरा के महंत शा.श्रीजीप्रकाशदासजी शा. चैतन्यस्वरुपदास तथा स्वा. विश्वस्वरुपदासजीने प्रासंगिक सभा में सुदंर प्रवचन किया था । अंत पू. महाराजश्री ने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। नरनारायणघाट के महंत स्वा. छोटे पी.पी. स्वामी सभा संचलान किये थे । *- शा. अभयप्रकाशदास*

मकारवाड में सत्संग सभा

यहाँ प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से सत्संग सभा अ.नि. भीखाभाई मोहनभाई के यहाँ आयोजित की गयी थी । जिस में श्री उदयनभाई महाराजा इत्यादि हरिभक्तों ने धर्मकुल का माहात्म्य समझाया था ।- *श्री नरनारायणदेव युवक मंडल*

मोटेरा में अखंड २४ घंटे की महामंत्र धुन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वचन से तथा छोटे पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से ता. ४-७-०९ को प्रातः ७-३० बजे प्रसादी के श्री स्वामिनारायण मंदिर में २४ घंटे तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धुन की गयी थी । इस प्रसंग की पूर्णाहुति शा.स्वा. रामकृष्णदासजी तथा साधु चैतन्यस्वरुपदास संत मंडल ने की थी । हरिभक्त बड़ी संख्या में उपस्थित थे । *- हर्षदभाई डी. पटेल*

रामोल (जामफलवाडी) श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव

यहाँ श्री स्वामिनारायण मंदिर का दूसरा पाटोत्सव ता. १८-६-०९ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से धूमधाम के साथ संपन्न हुआ । बाद में हरिभक्त के घर पदार्पण करके सभी को पावन किये थे।

नारायणघाट के महंत पी.पी. स्वामीने सुंदर आयोजन किया था । सभा संचालन शा.चैतन्यस्वरुपदासने किया था । सभी भक्त दर्शन का लाभ लिये थे । - *पुरुषोत्तमदास लहेरी*

नारायणपुरा मंदिर में हीर के झूले का दर्शन

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणपुरा में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा यहाँ के महंत शा.स्वा. श्रीजीप्रकाशदासजी की प्रेरणा से ठाकुर के समक्ष भव्य कलात्मक हीर का झूला बनाकर प.पू. महाराजश्री के वरद् हाथों से उद्घाटन कराया गया था । जिसे ता. २०-७-०९ तक चालु रखा जायेगा । १६ वां ज्ञानयज्ञ पारायण ता. १२-८-०९ से १६-८-०९ तक चलेगा । जिसमें श्रीहरि वनविचरण पारायण होगा । सभी भक्तों को दर्शन के लिये आमंत्रण है ।- *ऋषिकेश स्वामी*

आभार स्वीकार

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से स्वा. हरिजीवनदासजी लिखित (१) श्री स्वामिनारायण संप्रदाय दर्शन पुस्तक का प्रकाशन किया गया है । जिसे वांचने तथा मनन करने जैसा है । (२) चलो यौवन सजावीये जिससे युवानो को प्रेरणा मिलेगी ।

ऊँझा मंदिर में भव्य कलात्मक झूले का दर्शन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से (ब्राह्मण शेरी) श्री स्वामिनारायण मंदिर में भव्य झूले का दर्शन ता. १२-७-०९ से ता. १४-८-०९ तक होगा ।

कालीयाणा (ता. विरमगाँव)

श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से ता. ५-७-०९ के दिन गाँव के समस्त हरिभक्त समूह में १२ घंटे तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र की अखंड धुन किये थे । जिसमें स्त्री पुरुष दोनों ही बड़ी संख्या में उपस्थित थे । श्री डाह्याभाई बूटिया तथा को. इत्यादि हरिभक्त प्रेरणा रुप थे ।- *रुपाभाई हरिभाई*

साबरमती रामनगर

साबरमती श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से ता. ४-५-०९ के दिन ठाकुरजी का पाटोत्सव खूब हर्षोल्लास से संपन्न किया था । हरिभक्तों ने पूजन-अर्चन-आरती का दिव्य लाभ लिया था । - *रावजीभाई*

न्यु दिल्ली श्री स्वामिनारायण मंदिर में नये महंत की नियुक्ति

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से स्वा. धर्मस्वरुपदासजी गुरु जानकीवल्लभदासजी (नाथद्वारा) तथा जोइटं महंत के रुप में स्वयं प्रकाशदासजी की नियुक्ति की गयी है ।

अपने नाथद्वारा श्री स्वामिनारायण मंदिर का बदला हुआ फोन नं. **09352301410, 09983001226**

श्रीमद् भागवत ज्ञानयज्ञ

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्रीमद् भागवत संप्ताह का ता. १६-४-०९ से २२-४-०९ तक सुंदर आयोजन किया गया था। शा. हरिजीवनदासजीने अपनी अनोखी शैली में कथामृत का रसपान कराया था । - *जीनुभाई रावल*

लींबडी

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में पू. महाराजश्री की आज्ञा से महंत स्वामीने गुरु पुर्णिमा - झूलोत्सव तथा चातुर्मास की कथा का आयोजन किया था । हरिभक्त दर्शन करके प्रसन्न हो गये । - *अक्षयकुमार*

विदेश सत्संग समाच

कोलोनिया श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री हनुमानजी जयंती के शुभ अवसर पर पूजन-अर्चन परंपरा के अनुसार किया गया था । इसके साथ ही पूज्य बड़े महाराजश्री का प्रागट्योत्सव भी मनाया गया था । महंत स्वामी श्री हनुमानजी तथा धर्मकुल का माहात्म्य बड़े सुंदर ढंग से समझाया था ।

कोलोनिया मंदिर में प.पू. बड़े महाराजश्री का पदार्पण

प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू.अ.सौ.

लक्ष्मीस्वरुपागादीवालाजी पू. बिन्दुराजा तथा श्री सुव्रतकुमार एवं श्री सौम्यकुमार तथा पार्षद वनराज भगज साथ में पधारे थे। प.पू. बड़े महाराजश्रीने ठाकुरजी की आरती उतारकर सभी को अलौकिक दर्शन का लाभ दिया था। इसके बाद सभा में विराजमान हुये थे । सभा में कलिवलेन्ड मंदिर से शा.स्वा. धर्मवल्लभदासजी, विहोकन मंदिरसे महंत शा. माधवप्रसाददासजी यहाँ के महंत ज्ञानजीवनदासजी तथा हरिभक्तोंने पू. बड़े महाराजश्री का पुष्पहार से स्वागत करके आरती उतारी थी ।

संतोने प्रासंगिक सभा में भावि पीढ़ी को सुसंस्कृत होने पर बलदिया था । प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा लालजी महाराजश्री बालकों के संस्कार का चिंतन कर रहे हैं । इस वात की चर्चा किये थे । समस्त सभा को प.पू. बड़े महाराजश्रीने हार्दिक आशीर्वाद देते हुये बताया था कि सभी सत्संगी प्रत्येक उत्सव में अवश्य पधारे । *- सत्संगी समस्त*

विहोकन श्री स्वामिनारायण मंदिर का २२ वाँ पाटोत्सव प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हाथों से संपन्न

अमेरिका के न्युजर्सी विहोकन श्री स्वामिनारायण मंदिर का २२ वाँ पाटोत्सव प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हाथों से संपन्न हुआ ।

सर्व प्रथम मंदिर में प्रातः धुन-कीर्तन किया गया । पू. बिन्दुराजा के सानिध्य में समस्त महिलावर्ग मस्तक पर कलश रखकर जलयात्रा में भाग ली थी । प.पू. बड़े महाराजश्री जब मानसरोवर की यात्रा पर गये थे उस समय का यह पवित्र जल लाया गया था । जिसकी अलौकिकता स्पष्ट हो रही थी कलश की स्थापना भगवान के सिंहासन के पास किया गया था । प्रातः ९-०० बजे प.पू. बड़े महाराजश्री : श्री सुव्रतकुमार तथा श्री सौम्यकुमार एवं पुजारी संतो के वरद् हाथों से ठाकुरजी का षोडशोपचार महाभिषेक किया गया था । पाटोत्सव विधि श्री जगदीशभाई शुक्ल ने कराई थी । इस प्रसंग पर समूह महापूजा भी की गयी थी । सभी भक्त पाटोत्सव अभिषेक का दर्शन करके धन्य हो गये ।

इस प्रसंग पर सभा में महंत स्वामी धर्मवल्लभदासजी महंत स्वामी विश्वप्रकासदासजी महंत ज्ञानप्रकाशदासजी यहाँ के महंत माधव स्वामी इत्यादि संतो ने सर्वोपरि श्री हरि के माहाम्य तथा धर्मकुल का माहात्म्य समझाया था । इसके साथ ही संप्रदाय में उत्सवों का रहस्य भी समझाया था ।

बहनो की सभा में प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाजीने बहनों को अलौकिक दर्शनका सुख दिया था। यजमान परिवारने पूज्य बड़े महाराजश्री का पूजन अर्चन किया और आरती उतारकर आशीर्वाद प्राप्त किया था ।

अंत में समस्त सभा को प.पू. बड़े महाराजश्री ने हार्दिक आशीर्वाद दिया था । सत्संग पर बलदेते हुये महाराजश्री ने यह बताया कि प्रत्येक उत्सव में रहने से बड़ी शांति मिलती है । आप सभी का महाराज कल्याण करे ऐसा आशीर्वाद दिया था ।- *श्री न.ना.युवक मंडल*

सेवा मेडिकल केम्प फ्री डेन्टल हेल्थ फेर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से न्युजर्सी में २५ अप्रैल को फ्री डेन्टल केम्प बालको तथा बड़े सत्संगियो के लिये रखा गया था। जिस में अनेकों रोगी भाग लिये थे । रोग का निदान, दवा, मार्ग दर्शन डॉ. हिरेन शाह, डॉ. रोहिणी, डॉ. रघुवंशी, डॉ. दफ्तरी तथा साथ में अन्य सेवा भावी डॉक्टर सेवा में लगे थे। प्रत्येक १५ दिन में सेवा संस्था द्वारा मेडिकल केम्प का आयोजन होता रहता है । जिसका लाभ सत्संगियों को पूर्ण रुप से मिलता है ।

वोशिंग्टन डी.सी. (I.S.S.O. चेप्टर)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से २८ मार्च, ४ अप्रैल, १८ अप्रैल, १ मई, १५ मई, १३ जून तथा २६ जून को अनेक स्थलों पर सत्संग का आयोजन किया गया था। जिस में सर्व प्रथम मारे ओरडे पद से भजन का आरंभ करके वचनामृत पाठ तथा नित्य नियम इत्यादि किया गया था । सभा में कलिवलेन्ड से हरिनंदन स्वामी १ घंटे तक सेलफोन द्वारा कथा सुनाये थे। प.पू. बड़े महाराजश्री के प्रागट्य दिन पर भक्तों की भावना की प्रशंसा की थी । प.पू. बड़े महाराजश्री सेलफोन पर सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे । सभा में सभी हरिभक्त प.पू. बड़े महाराजश्री के तस्वीर की आरती उतारी थी । १६ मई को कलिवलेन्ड श्रीहरिवल्लभ स्वामीने सेलफोन के माध्यम से

कथा का रसपान कराया था । २२ मई को भी सुंदर सभा का आयोजन किया गया था । १३ जून को हरिवल्लभ स्वामीने सेलफोन द्वारा श्रीहरि का तथा धर्मकुल का माहात्म्य समझाया था। प्रत्येक सभा में बड़ी संख्या में हरिभक्त उपस्थित होकर धून-भजन-कीर्तन कथा का लाभ लेते हैं । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की कृपा से सत्संग प्रवृत्ति अच्छी चलती है । *- कनुभाई पटेल*

श्री स्वामिनारायण मंदिर शिकागो

यहाँ के मंदिर में विराजमान श्री घनश्याम महाराजश्री राधाकृष्णदेव का ११ वार्षिक पाटोत्सव के शुभ अवसर पर ११ घंटे की धुन का आयोजन किया गया था । ता. २५-७-०९ को प्रातः ८ बजे से सायं ६-०० बजे तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र चलता रहा । प्रातः मंगला आरती के दर्शन के बाद धुन आरंभ की गयी थी । स्वा. रामकृष्णदासजी धुन में एकाग्रचित्त होकर बैठे थे। भक्त सभी इस धुन में लगे रहे । धुन की समाप्ति के बाद आनंदित भक्तजन प्रभु का सायंकालीन आरती का दर्शन करके विदा हुये । *- जे.पी. स्वामी*

अक्षरनिवासी संत-हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजलि

छपैयाधाम : अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर के वयोवृद्ध पू. ब्र. गवैया स्वामी रामकृष्णानंदजी आषाढ कृष्ण-११ के शुभ दिन छपैयाधाम में सर्वोपरि श्री घनश्याम महाराज का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं ।

अहमदाबाद : श्री स्वामिनारायण मंदिर के संत गुरुप्रकाश स्वामी गुरु स्वामी कृष्णदासजी वैशाख शुक्ल-१० को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं ।

अहमदाबाद : श्री नरनारायणदेव के उत्सवी श्री पंकजभाई लक्ष्मणदास सोनी (उम्र ५७ वर्ष) ता. २३-६-०९ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये है ।

नारायणघाट (जेतलपुर) : श्री जयंतीभाई शामलदास पटेल श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं ।

सोजा : श्री विरचंदभाई सोमाभाई ता. २०-६-०९ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं ।

अहमदाबाद : श्री वासुदेवभाई अमृतलाल ब्रह्मभट्ट ता. २७-४-०९ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं ।

फिचोड (इडर) : पटेल नाथाभाई भगत श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं ।

अहमदाबाद : श्री नरनारायणदेव उत्सव मंडल के श्री जितेन्द्रकुमार वंशीलाल मोदी (उम्र ५५ वर्ष) ता. १-७-०९ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं ।

सबापुरा : श्री भीखाभाई मणीलाल पटेल ता. २१-७-०९ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं ।

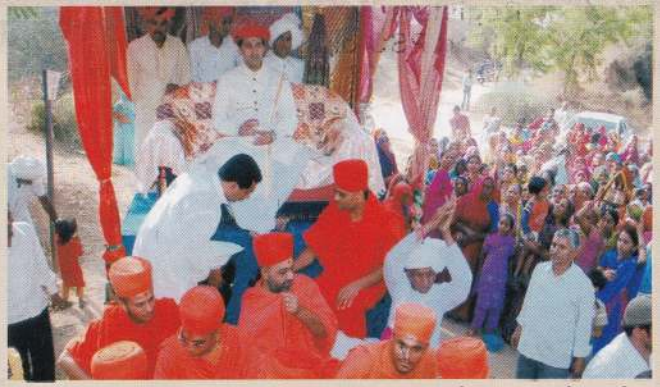
उमरेठ निवासी (वर्तमान में अहमदाबाद) : श्री धर्मप्रसाद शुक्ल की धर्मपत्नी अ.सौ. सरोजबहन आषाढ कृष्ण-१२ को (ता. १९-७-०९ को) श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई हैं ।

अहमदाबाद : श्री प्रफुलचन्द्र रमणलाल पटेल (जमीयतपुरा) १६-७-०९ को श्रीहरि का अखंड स्मरण कते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं ।

संपादक , मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्री स्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित



प्रांतीज मंदिर में पाटोत्सव की आरती उतारते हुये प.पू. आचार्य महाराजश्री ।



धरमपुर (भुंडीया) पारायण प्रसंग पर शोभायात्रा में दर्शन देते हुये प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ।



सत्संग का नूतन गाम मुवाडी (पंचमहाल) नूतन मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर सभा में दर्शन देते हुये प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा सभा को संबोधित करते हुये पू.पी.पी. स्वामी ।



आगण गांव की शोभायात्रा में प.पू. महाराजश्र का अलौकिक दर्शन ।



मथुरा मंदिर पाटोत्सव प्रसंग पर सभा में दर्शन देते हुये प.पू. महाराजश्री, वक्ता पू. शा. निर्गुणदासजी तथा संबोधन करते हुये पू. पी.पी. स्वामी ।



ईडर मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर यजमान पार को आशीर्वाद देते हुये प.पू. महाराजश्री ।





Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at
Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581
issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2011



गुरुपूर्णिमा



